

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार



बाइजৰ কথা বাইজৰ মাজলৈ সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL WEEKLY

JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 06 November 2026 :: Year-1 Vol-43 Issue-22 :: शुक्रवार। 06 नवंबर 2026। शक संवत 1948। कार्तिक। कृष्ण। द्वादशी। :: पृष्ठ-20। मूल्य-15 रुपए

जन चिंतन — धनेश्वर चौधरी

अखिलेश का कृष्ण प्रेम!

बाबा बागेश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के एक बयान पर अखिलेश यादव की राजनीति में जैसे भूचाल आ गया। प्रतिबंध की मांग, कार्यक्रमों के विरोध और तीखी बयानबाजी से ऐसा लगने लगा मानो देश के सामने सबसे बड़ा संकट बाबा बागेश्वर ही हों! लेकिन सवाल है कि अखिलेश यादव की यह बेचैनी आखिर किस बात को लेकर है?

बाबा की टिप्पणी अनुचित है तो उसकी आलोचना होनी चाहिए। राम और कृष्ण की तुलना करके किसी की आस्था को आहत करने का अधिकार किसी को नहीं है। लेकिन क्या अखिलेश यादव की धार्मिक संवेदनशीलता का यही पैमाना तब भी था, जब उनकी पार्टी के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य रामचरितमानस और सनातन धर्म पर विवादित टिप्पणियां कर रहे थे? तब पार्टी नेतृत्व की आवाज इतनी बुलंद **शेष पृष्ठ 2 पर**

सीमा के प्रहरी ही निशाने पर!

जन जन विचार

...✍ अगरतला/बॉक्सानगर

देश की अंतर्राष्ट्रीय सीमा की रक्षा करने वाले जवान यदि अपनी ही जमीन पर भीड़ के हमले का शिकार होने लगें, तो यह केवल कानून-व्यवस्था की घटना नहीं, बल्कि सुरक्षा व्यवस्था के सामने खड़ी गंभीर चुनौती है। त्रिपुरा के सेपाहिजाला जिले में भारत-बांग्लादेश सीमा के निकट अशाबाड़ी गांव में 2 नवंबर को हुई हिंसक घटना ने इसी चिंता को राष्ट्रीय बहस के केंद्र में ला दिया है। तस्करी की गतिविधियों को रोकने पहुंचे सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों को कथित तौर पर 50 से अधिक लोगों की भीड़ ने घेरकर हमला किया। तीन जवान गंभीर रूप से घायल हुए, जबकि उनके हथियार छीनने और सरकारी वाहन को क्षतिग्रस्त करने की कोशिश भी की गई।

प्राप्त पुलिस जानकारी के अनुसार, बीएसएफ की 49वीं बटालियन के जवान अशाबाड़ी सीमा चौकी के अंतर्गत भारत-बांग्लादेश सीमा पर संदिग्ध तस्करी गतिविधियों पर नजर रख रहे थे। इसी दौरान जवानों ने संदिग्ध **शेष पृष्ठ 3 पर**



मुख्यमंत्री का सख्त संदेश, पुलिस की कार्रवाई

घटना के बाद त्रिपुरा के मुख्यमंत्री डॉ. माणिक साहा ने हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने स्पष्ट किया कि देश की सुरक्षा में तैनात जवानों पर हमला किसी भी परिस्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने पुलिस महानिदेशक और संबंधित अधिकारियों को दोषियों के खिलाफ त्वरित एवं कठोर कानूनी कार्रवाई के निर्देश दिए। सेपाहिजाला पुलिस के अनुसार, 3 नवंबर तक नौ लोगों को गिरफ्तार किया गया था। इनमें छह पुरुष और तीन महिलाएं शामिल बताई गईं। मामले में प्राथमिकी दर्ज कर अन्य आरोपियों की तलाश और जांच जारी है। पुलिस ने संकेत दिया है कि घटना में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की जा रही है।

खाकी और काले कोट में टकराव, पुलिस मुख्यालय तक पहुंचा विवाद

जन जन विचार

...✍ नई दिल्ली

देश की राजधानी दिल्ली में पुलिस और अधिवक्ताओं के बीच शुरू हुआ विवाद अब दो संस्थाओं के बीच गंभीर टकराव का रूप ले चुका है। एक सैलून के बाहर बाइक खड़ी करने को लेकर शुरू हुआ विवाद पहले शाहदरा थाने तक पहुंचा, फिर जिला अदालतों में वकीलों की हड़ताल और अंततः पुलिस मुख्यालय के बाहर पुलिसकर्मियों के प्रदर्शन में बदल



गया। इस पूरे घटनाक्रम में सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) मनस्वी वशिष्ठ का निलंबन एक नया मोड़ है। अब दिल्ली उच्च न्यायालय में भी पुलिस अधिकारियों के कथित धमकी भरे बयानों को लेकर याचिका पर सुनवाई होनी है।

मामले ने पुलिस बल के अनुशासन, अधिवक्ताओं की पेशेवर गरिमा, थानों में जांच की निष्पक्षता और कानून लागू करने वाली संस्थाओं की जवाबदेही पर सवाल खड़े कर दिए हैं। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि कानून और न्याय व्यवस्था से जुड़े दो महत्वपूर्ण पक्ष एक-दूसरे के खिलाफ सड़क पर उतर आए हैं।

एक बाइक से शुरू हुआ विवाद

विवाद की शुरुआत 23 अक्टूबर को उत्तर-पूर्वी दिल्ली के रोहताश नगर इलाके में हुई। एक सैलून के बाहर खड़ी बाइक से रास्ता बाधित होने पर सैलून संचालिका शीतल ठाकुर और उनके पति राहुल ने बाइक हटाने को कहा। इस बात पर कहासुनी हुई और मामला बढ़ गया।

शेष पृष्ठ 5 पर



रामलीला मैदान में विपक्ष का शक्ति प्रदर्शन

राहुल गांधी ने उठाया 'वोट चोरी' का मुद्दा

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

देश में चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता और मतदाता सूची में कथित गड़बड़ियों को लेकर सियासी संघर्ष अब सड़कों तक पहुंच गया है। 1 नवंबर को दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में इंडी गठबंधन ने 'वोट बचाओ, देश बचाओ' महारैली आयोजित कर केंद्र सरकार और चुनाव आयोग के खिलाफ मोर्चा खोला। विपक्षी दलों ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग करते हुए आरोप लगाया कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के नाम पर बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं।

रामलीला मैदान में आयोजित इस रैली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा, समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, राजद नेता तेजस्वी यादव और अन्य विपक्षी नेताओं ने भाग लिया। रैली से पहले विपक्षी नेताओं ने मिंटो रोड से अजमेरी गेट होते हुए रामलीला मैदान तक मार्च किया। इस आयोजन में इंडी गठबंधन के कई घटक दलों ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई।

राहुल गांधी का आरोप मतदान का अधिकार खतरे में

रैली को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि देश में चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश हो रही है। उन्होंने मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं और नाम हटाए जाने के मुद्दे को उठाते हुए चुनाव आयोग की जवाबदेही पर सवाल खड़े किए। राहुल गांधी ने कहा कि मतदान का अधिकार लोकतंत्र की बुनियाद है और इसकी रक्षा के लिए विपक्ष संघर्ष जारी रखेगा।

विपक्ष का कहना है कि एसआईआर प्रक्रिया के दौरान वैध मतदाताओं के नाम हटाए जाने की शिकायतें सामने आई हैं। गठबंधन ने चुनाव आयोग से इन शिकायतों पर जवाब देने और पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने की मांग की है।

चुनाव आयोग और सरकार का पक्ष

दूसरी ओर, चुनाव आयोग का पक्ष है कि मतदाता सूची का पुनरीक्षण एक वैधानिक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य मृत, स्थानांतरित, दोहरी और अपात्र प्रविष्टियों को हटाकर सूची को शुद्ध करना है। आयोग ने राजनीतिक पक्षपात के आरोपों को खारिज किया है। उसका कहना है कि जिन पात्र मतदाताओं के नाम गलती से हट गए हैं, वे निर्धारित प्रक्रिया के तहत दोबारा पंजीकरण करा सकते हैं।

इस प्रकार एसआईआर को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच टकराव लगातार बढ़ रहा है। विपक्ष इसे मतदान के अधिकार से जुड़ा गंभीर प्रश्न बता रहा है, जबकि सरकार और भाजपा इसे राजनीतिक मुद्दा बनाकर चुनाव आयोग पर दबाव बनाने की कोशिश करार दे रहे हैं।

भाजपा का पलटवार, 1984 के दंगों का मुद्दा उठा

विपा की रैली के बीच भाजपा ने भी कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। भाजपा ने 1 नवंबर की तारीख को लेकर सवाल उठाए। पार्टी का कहना है कि इसी दिन 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली में सिख विरोधी हिंसा भड़की थी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सहित भाजपा नेताओं ने कांग्रेस पर इस ऐतिहासिक त्रासदी के पीड़ितों की भावनाओं की अनदेखी करने का आरोप लगाया।

इस तरह चुनाव आयोग की निष्पक्षता से शुरू हुआ विवाद राजनीतिक रूप से 1984 के सिख विरोधी दंगों तक पहुंच गया। दोनों पक्षों के आरोपों ने दिल्ली की राजनीति को और गर्म कर दिया।

विपक्षी एकजुटता के सामने बड़ी चुनौती

रामलीला मैदान की रैली विपक्षी एकता के लिहाज से भी महत्वपूर्ण रही। कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने चुनावी पारदर्शिता को साझा राजनीतिक मुद्दा बनाने की कोशिश की है। हालांकि विभिन्न राज्यों में अलग-अलग राजनीतिक हित रखने वाले विपक्षी दलों के बीच इस एकजुटता को लगातार बनाए रखना भी गठबंधन के सामने चुनौती है।

जनता के सामने असली सवाल

भारतीय लोकतंत्र में चुनाव आयोग की विश्वसनीयता और मतदाता सूची की शुद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है। किसी भी पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची से गलत तरीके से हटना गंभीर विषय है। वहीं, अपात्र और दोहराव वाली प्रविष्टियों को हटाना भी निष्पक्ष चुनाव के लिए आवश्यक है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

अखिलेश का कृष्ण प्रेम!

क्यों नहीं थी? और जब इंडी गठबंधन के सहयोगी डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन ने सनातन धर्म को समाप्त करने की बात कही और उसकी तुलना बीमारियों से की, तब गठबंधन के शीर्ष नेताओं ने ऐसी एकजुटता क्यों नहीं दिखाई? क्या गठबंधन की मजबूरियां सनातन के सम्मान से बड़ी हो गई थीं?

अखिलेश यादव को यह भी समझना होगा कि भगवान श्रीकृष्ण किसी जाति, परिवार या राजनीतिक दल की निजी संपत्ति नहीं हैं। वे संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। यादव समाज की आस्था का सम्मान जरूरी है, लेकिन कृष्ण को राजनीतिक वोट बैंक की चौहद्दी में बांधना भी उनकी व्यापक विरासत को छोटा करना होगा।

एक और सवाल-यदि बाबा का बयान गलत है तो उसका जवाब तर्क, तथ्य और वैचारिक विरोध से दीजिए। प्रतिबंध की राजनीति क्यों? क्या असहमति का उत्तर बहिष्कार ही रह गया है?

सनातन पर चोट हो तो चुप्पी और कृष्ण पर विवाद हो तो तूफान! यह कैसी राजनीतिक संवेदनशीलता है?

अखिलेश यादव को बताना चाहिए कि उनकी लड़ाई धार्मिक मर्यादा के लिए है या राजनीतिक जमीन बचाने के लिए? क्योंकि जनता अब केवल बयान नहीं, नेताओं के दोहरे मानदंडों का हिसाब भी मांगती है।

कृष्ण को राजनीति की ढाल मत बनाइए। आस्था का सम्मान कीजिए-चाहे बोलने वाला बाबा हो, नेता हो या गठबंधन का सहयोगी!

राशिफल

06 से 12 नवंबर, 2026।। विक्रम संवत 2083-**मास** : कार्तिक, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** : द्वादशी

मेष : यह सप्ताह आपके लिए उत्साह और नई संभावनाओं से भरा रह सकता है। कार्यक्षेत्र में लंबे समय से अटके काम पूरे होने के संकेत हैं। नौकरीपेशा लोगों को अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार में नई योजनाएं लाभदायक हो सकती हैं। पारिवारिक मामलों में धैर्य बनाए रखें। जीवनसाथी के साथ तालमेल अच्छा रहेगा।

वृषभ : सप्ताह की शुरुआत आर्थिक मामलों में अनुकूल रह सकती है। आय के नए स्रोत बनने की संभावना है। व्यापारियों को पुराने संपर्कों से लाभ मिल सकता है। नौकरी में आपकी कार्यक्षमता की सराहना होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। किसी पुराने मित्र से मुलाकात मन प्रसन्न करेगी। प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी।

मिथुन : इस सप्ताह आपको अपनी प्रतिभा दिखाने के अच्छे अवसर मिल सकते हैं। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिलेंगी, जिन्हें आप सफलतापूर्वक निभा सकते हैं। व्यापार में सोच-समझकर लिए गए निर्णय लाभ देंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं, लेकिन खर्च भी बढ़ सकते हैं। पारिवारिक जीवन में छोटी-मोटी गलतफहमियां हो सकती हैं।

कर्क : सप्ताह आपके लिए मिला-जुला परिणाम देने वाला रहेगा। कार्यक्षेत्र में मेहनत के बावजूद अपेक्षित सफलता मिलने में थोड़ा समय लग सकता है। अधिकारियों से बातचीत करते समय सावधानी रखें। व्यापार में किसी नए समझौते से पहले सभी पहलुओं की जांच करें। परिवार के सदस्यों का सहयोग मिलेगा। जीवनसाथी के साथ संबंध मजबूत होंगे।

सिंह : यह सप्ताह आत्मविश्वास और उत्साह में वृद्धि करने वाला साबित हो सकता है। नौकरी में पदोन्नति अथवा नई जिम्मेदारी मिलने की संभावना है। व्यापारियों को नए अवसर मिल सकते हैं। सप्ताह के उत्तरार्ध में कार्यक्षेत्र में आपकी सक्रियता बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन में खुशियां आएंगी। संतान की उपलब्धि से गर्व महसूस होगा।

कन्या : सप्ताह आपके लिए महत्वपूर्ण बदलावों का संकेत दे रहा है। कार्यक्षेत्र में पुरानी योजनाओं को दोबारा व्यवस्थित करने का अवसर मिलेगा। आर्थिक मामलों में सतर्कता जरूरी है। व्यापार में लाभ के साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आ सकती हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, लेकिन आप उन्हें अच्छी तरह निभाएंगे।

तुला : सप्ताह की शुरुआत थोड़ी व्यस्त रह सकती है, लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियां आपके पक्ष में होती दिखाई देंगी। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यापारियों को पुराने निवेश से लाभ मिलने की उम्मीद है। किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह उपयोगी साबित होगी।

वृश्चिक : सप्ताह की शुरुआत थोड़ी व्यस्त रह सकती है, लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियां आपके पक्ष में होती दिखाई देंगी। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यापारियों को पुराने निवेश से लाभ मिलने की उम्मीद है। किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह उपयोगी साबित होगी। पारिवारिक मामलों में भावनाओं के बजाय विवेक से काम लें। प्रेम संबंधों में पारदर्शिता बनाए रखें। आर्थिक लेन-देन में सावधानी बरतें।

धनु : यह सप्ताह प्रगति और नई योजनाओं के लिए अनुकूल रह सकता है। नौकरी में आपकी मेहनत का सकारात्मक परिणाम मिलेगा। व्यवसाय में विस्तार की योजना बना सकते हैं। विदेश से जुड़े कार्यों में सफलता के संकेत हैं। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छे परिणाम के लिए अतिरिक्त प्रयास करना होगा। परिवार में सुखद वातावरण रहेगा।

मकर : इस सप्ताह आपको धैर्य और मेहनत के बल पर सफलता प्राप्त हो सकती है। नौकरी में काम का दबाव रहेगा, लेकिन वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार में आर्थिक लेन-देन सोच-समझकर करें। पुराने कर्ज अथवा आर्थिक उलझनों से राहत मिलने की संभावना है। पारिवारिक जीवन में जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें।

कुंभ : सप्ताह आपके लिए नई उम्मीदें लेकर आ सकता है। कार्यक्षेत्र में रचनात्मक विचारों को पहचान मिलेगी। नौकरी बदलने की योजना बना रहे लोगों को अच्छे अवसर मिल सकते हैं। व्यापार में नए ग्राहकों से संपर्क बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं, लेकिन निवेश के मामलों में जल्दबाजी न करें। मित्रों और रिश्तेदारों से सहयोग मिलेगा। प्रेम जीवन में सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं। प्रेम जीवन में सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए समय उत्साहवर्धक रहेगा।

मीन : यह सप्ताह आपके लिए कुछ नई चुनौतियों के साथ सफलता के अवसर भी लेकर आएगा। नौकरी में अतिरिक्त जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। व्यापार में पुराने विवाद सुलझाने का प्रयास सफल हो सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखें। परिवार के किसी सदस्य की सलाह आपके लिए उपयोगी रहेगी। दांपत्य जीवन में आपसी समझ बढ़ेगी। विद्यार्थियों को लक्ष्य के प्रति गंभीर रहना होगा। विद्यार्थियों को लक्ष्य के प्रति गंभीर रहना होगा। पर्याप्त आराम और सकारात्मक सोच बनाए रखें।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

06 नवंबर (शुक्रवार) : धनत्रयोदशी (धनतेरस)
08 नवंबर (रविवार) : दीपावली पूजन
09 नवंबर (सोमवार) : अन्नकूट
10 नवंबर (मंगलवार) : यम द्वितीया, भाई दूज

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

धन दिशा



दिवाली के बाद करें पैसों की सफाई

दिवाली पर घर की सफाई करते हैं, नई चीजें लाते हैं, पुरानी चीजें हटाते हैं। यह परंपरा बहुत अच्छी है। लेकिन एक सफाई और होनी चाहिए, पैसों की। दिवाली के बाद हर साल यही होता है -ईएमआई बढ़ गई, कार्ड का बिल आया, और जेब हल्की हो गई। इस बार हिसाब लगाएं और आगे की राह तय करें।

पहले खर्च का हिसाब, कागज या फोन पर लिखें- पिछले एक महीने में पूजा, धनतेरस, दिवाली, मिठाई, कपड़े, और गिफ्ट पर कुल कितना खर्च हुआ। अब सोचें-यह खर्च आपकी योजना में था या बह गया? अगर बजट से ज्यादा हुआ, तो क्यों? यह सवाल आगे की गलती रोकेगा।

क्रेडिट कार्ड का बिल - अभी चुकाएं। अगर क्रेडिट कार्ड पर खर्च हुआ है तो पूरा बिल Minimum Due नहीं, पूरा चुकाएं। Minimum Due सिर्फ 5 प्रतिशत होता है- बाकी पर 36-42 प्रतिशत सालाना ब्याज लगता है। एक महीने की देरी अगले 6 महीने का बोझ बन जाती है। इसलिए इस महीने कहीं और कटौती करें, लेकिन कार्ड का पूरा बिल जमा करें।

ईएमआई का बोझ जांचें, अभी जोड़ें - हर महीने कितनी ईएमआई जा रही है। अगर यह आपकी मासिक आमदनी के 40 प्रतिशत से ज्यादा है, तो आपको ईएमआई ट्रैप में फंसने का खतरा है। इस स्थिति में नई ईएमआई बिल्कुल न लें और जहां संभव हो पूर्व भुगतान करके एक-दो लोन बंद करें।

एसआईपी बंद न करें - यह सबसे बड़ी गलती है। त्योहारी खर्च के बाद कई लोग एसआईपी बंद कर देते हैं। यह गलत है। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत है कंपाउंडिंग— और यह तभी काम करती है जब निवेश लगातार हो। अगर एक-दो एसआईपी की किस्त जानी है तो खाने के बाहर खाने, पेट्रोल की फिजूलखर्ची, या ओटीटी सब्सक्रिप्शन से बचाएं — एसआईपी मत रोकें।

अगले त्योहार के लिए अभी बचाना शुरू करें। हर साल यही होता है — त्योहार आते हैं, हम कर्ज लेते हैं या सैविंग्स तोड़ते हैं। इस बार एक 'फेस्टिवल फंड' बनाएं। अगले 10 महीने तक हर महीने 1,000-2,000 रुपए रद्दी खाते में डालें। अगले साल दिवाली पर बिना किसी तनाव के खर्च होगा।

अगले हफ्ते : साल के आखिरी महीने में यह काम जरूर करें - टैक्स, निवेश और बीमा की समीक्षा, अभी नहीं तो कब?

इस कॉलम के लिए आपका कोई सवाल है? हमें भेजिए

-कोमल जैन

पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट, संस्थापक, वेल्थप्लायर्स- मो. 9004510577

बिहार पहुंचे हिमंत, गरमाई सियासत

जन जन विचार
...✍ पूर्णिया/पटना

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा का 4 नवंबर का बिहार दौरा केवल एक औपचारिक राजनीतिक यात्रा बनकर नहीं रहा। पूर्णिया में भाजपा की 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' पदयात्रा में उनकी भागीदारी और पटना में मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी से मुलाकात ने इस दौरे को राष्ट्रीय राजनीति के लिहाज से भी चर्चा में ला दिया।

सीमांचल की राजनीतिक धरती पर आयोजित इस पदयात्रा में पूर्णिया, कटिहार, अररिया और किशनगंज सहित आसपास के क्षेत्रों से भाजपा कार्यकर्ताओं की भागीदारी रही। पदयात्रा के जरिए पार्टी ने लोकतंत्र और राजनीतिक व्यवस्था से जुड़े अपने मुद्दों को जनता के बीच रखने की कोशिश की। कार्यक्रम में बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल सहित पार्टी के कई नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कांग्रेस पर सीधा हमला, बयानों से बढ़ी राजनीतिक गर्मी

पूर्णिया में जनसभा के दौरान डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कांग्रेस और राहुल गांधी पर तीखे राजनीतिक हमले किए। उन्होंने अयोध्या में बाबरी मस्जिद के मुद्दे का उल्लेख करते हुए कांग्रेस पर निशाना साधा। उनके बयान ने राजनीतिक बहस को और तेज कर दिया। उन्होंने अपने भाषण में बांग्लादेश का भी उल्लेख किया, जिस पर विपक्षी दलों की प्रतिक्रिया सामने आने की संभावना है।

हिमंत की राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा, घुसपैठ, धार्मिक पहचान और विपक्ष की नीतियों जैसे मुद्दे प्रमुखता से सामने आते रहे हैं। बिहार में भी उनके भाषण का केंद्र यही राजनीतिक विमर्श रहा। हालांकि इन मुद्दों पर भाजपा और विपक्ष के दृष्टिकोण में स्पष्ट मतभेद हैं।

पटना में सम्राट चौधरी से मुलाकात

पूर्णिया के कार्यक्रम के बाद बिहार की राजधानी पटना में डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने असम और बिहार के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत करने की बात कही। डॉ. शर्मा ने असम में रह रहे बिहारी समुदाय के आर्थिक और सामाजिक योगदान का भी उल्लेख किया।

यह मुलाकात इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि असम और बिहार के बीच केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि श्रम, व्यापार, संस्कृति और सामाजिक संबंधों का भी पुराना रिश्ता रहा है। असम के चाय बागानों, निर्माण क्षेत्र और व्यापारिक गतिविधियों में बिहार मूल के लोगों की भागीदारी लंबे समय से रही है।

असम मॉडल की राजनीतिक चर्चा

डॉ. हिमंत विश्व शर्मा भाजपा के उन मुख्यमंत्रियों में शामिल हैं जो राज्य की राजनीति के साथ राष्ट्रीय राजनीतिक अभियानों में भी सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। बिहार में उनकी मौजूदगी को इसी व्यापक राजनीतिक सक्रियता के संदर्भ में देखा जा सकता है।

भाजपा के लिए सीमांचल का क्षेत्र राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पूर्णिया, अररिया, किशनगंज और कटिहार जैसे जिलों में विभिन्न समुदायों की सामाजिक संरचना, विकास, रोजगार, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं से जुड़े सवाल चुनावी विमर्श को प्रभावित करते हैं। ऐसे क्षेत्र में बड़े नेताओं की पदयात्रा और जनसभाएं पार्टी के संगठनात्मक संपर्क को मजबूत करने का माध्यम बनती हैं।

असम-बिहार संबंधों का भी अहम पहलू

इस दौरे का एक दूसरा पक्ष दोनों राज्यों के बीच सहयोग की संभावनाएं हैं। बाढ़ प्रबंधन, सड़क और रेल संपर्क, रोजगार, प्रवासी श्रमिकों के हित तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे विषय दोनों राज्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं। राजनीतिक मुलाकातों को इन मुद्दों पर ठोस प्रशासनिक सहयोग में बदलना ही ऐसे दौरों की वास्तविक उपयोगिता तय करेगा।

सवाल केवल राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन का नहीं, बल्कि जवाबदेही का भी है। बिहार और असम दोनों राज्यों की जनता रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, बाढ़ नियंत्रण और बेहतर बुनियादी सुविधाओं की अपेक्षा रखती है। ऐसे में नेताओं के भाषणों और राजनीतिक संदेशों के साथ यह देखना भी जरूरी होगा कि दोनों सरकारें जनता से जुड़े इन सवालों पर किस तरह आगे बढ़ती हैं। डॉ. हिमंत विश्व शर्मा का बिहार दौरा भाजपा की अंतरराज्यीय राजनीतिक सक्रियता और सीमांचल में संगठनात्मक पहुंच का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। लेकिन लोकतंत्र की असली कसौटी पदयात्राओं और नारों से आगे बढ़कर विकास, पारदर्शिता और जनहित के सवालों पर सरकारों के प्रदर्शन से तय होती है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

सीमा के प्रहरी ही निशाने पर!

गतिविधियों में शामिल लोगों को रोकने का प्रयास किया। मौके से गांजा और एक मोबाइल फोन बरामद किए जाने की भी जानकारी सामने आई है।

इसके बाद एक स्थानीय व्यक्ति को हिरासत में लेने को लेकर विवाद बढ़ गया। स्थानीय लोगों ने बॉक्सानगर-रहीमपुर सड़क पर जाम लगा दिया। हालात तब और बिगड़ गए जब मौके पर पहुंचे बीएसएफ के सहायक कमांडेंट रोहित कुमार और उनके साथियों को भीड़ ने घेर लिया। लाठी-डंडों से हमला किया गया और जवानों के वाहन में तोड़फोड़ की गई।

हमले में सहायक कमांडेंट सहित तीन जवान गंभीर रूप से घायल हुए। एक जवान की सर्विस राइफल छीनने की भी कोशिश हुई। पुलिस और बीएसएफ के अतिरिक्त जवानों के पहुंचने के बाद स्थिति नियंत्रित की गई। छीना गया हथियार बाद में बरामद कर लिया गया।

मुख्यमंत्री की सख्ती के साथ प्रशासन ने संवेदनशील इलाके में अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती की। बीएसएफ के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी घटनास्थल का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया।

सीमा पर सक्रिय तस्करी नेटवर्क

त्रिपुरा की बांग्लादेश से लगती अंतर्राष्ट्रीय सीमा लंबे समय से सुरक्षा एजेंसियों के लिए चुनौतीपूर्ण रही है। सीमावर्ती इलाकों में मादक पदार्थों, प्रतिबंधित वस्तुओं और अन्य सामान की अवैध आवाजाही रोकना सुरक्षा बलों की बड़ी जिम्मेदारी है। ऐसे में तस्करी रोकने की कार्रवाई के दौरान जवानों पर सामूहिक हमला कई गंभीर सवाल खड़े करता है।

क्या तस्करी के धंधे में ऐसे स्थानीय नेटवर्क सक्रिय हैं, जिन्हें कार्रवाई रोकने के लिए भीड़ जुटाने का सहारा लेना पड़ता है? क्या अवैध कारोबार से जुड़े लोगों को स्थानीय स्तर पर संरक्षण मिल रहा है? क्या सीमा पर तैनात जवानों को पर्याप्त सुरक्षा और खुफिया सहयोग उपलब्ध है? इन सवालों के जवाब जांच से ही सामने आएंगे। फिलहाल किसी राजनीतिक या प्रशासनिक संरक्षण की पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन पूरे नेटवर्क की निष्पक्ष जांच जरूरी है।

पत्रकार भी नहीं रहे सुरक्षित

घटना के दौरान घायल जवानों की मदद के लिए पहुंचे कुछ पत्रकारों को भी चोट लगने की खबर सामने आई है। यदि यह पुष्टि होती है, तो यह घटना की गंभीरता को और बढ़ाती है। सीमा क्षेत्र में कानून-व्यवस्था की स्थिति को सामने लाने वाले पत्रकारों की सुरक्षा भी प्रशासन की जिम्मेदारी है।

सरकार के सामने अब असली परीक्षा

मुख्यमंत्री की सख्त चेतावनी और गिरफ्तारियां तत्काल कार्रवाई का संकेत हैं, लेकिन केवल कुछ लोगों की गिरफ्तारी से समस्या का स्थायी समाधान नहीं होगा। जरूरी है कि हमले में शामिल प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका की पहचान हो, तस्करी के पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश किया जाए और सीमा पर सुरक्षा बलों की कार्यक्षमता मजबूत की जाए।

त्रिपुरा की अशाबाड़ी घटना ने एक बार फिर यह सवाल देश के सामने रख दिया है कि आखिर सीमा की रक्षा करने वाले जवानों को अपनी ड्यूटी निभाने के दौरान भीड़ के हमले का सामना क्यों करना पड़ रहा है? सीमा पर तैनात जवानों के हाथों में देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी है। उनके खिलाफ हिंसा केवल एक सरकारी बल पर हमला नहीं, बल्कि कानून के शासन को चुनौती है। अब कार्रवाई ऐसी होनी चाहिए कि सीमा पर तस्करी करने वालों और कानून हाथ में लेने वालों—दोनों को स्पष्ट संदेश मिले कि देश की सुरक्षा से खिलवाड़ की कोई जगह नहीं है।

संपादकीय

बदलती आबादी की चुनौती

भारत की जनसंख्या भले ही बढ़ रही हो, लेकिन देश की प्रजनन दर में लगातार गिरावट एक नई चिंता का संकेत दे रही है। सुप्रीम कोर्ट की ताजा टिप्पणी ने इस बहस को नया आयाम दिया है कि दो से अधिक संतान होने पर चुनाव लड़ने से रोकने जैसे कानून आज कितने प्रासंगिक रह गए हैं। कभी बढ़ती आबादी को विकास की सबसे बड़ी बाधा माना जाता था, लेकिन अब तस्वीर बदल रही है। देश की प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर से नीचे पहुंच चुकी है और बुजुर्गों की आबादी तेजी से बढ़ रही है।

यह समय जनसंख्या के नाम पर प्रतिबंध लगाने का नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करने का है। अलग-अलग राज्यों की जनसांख्यिकीय परिस्थितियां भी अलग हैं। इसलिए एक समान नीति थोपना उचित नहीं होगा। सरकार को समझना होगा कि भारत की असली चुनौती केवल आबादी बढ़ना नहीं, बल्कि भविष्य में कामकाजी युवाओं का अनुपात घटना भी है। जनसंख्या नीति का आधार राजनीतिक नारे नहीं, वैज्ञानिक आंकड़े और बदलती सामाजिक वास्तविकताएं होनी चाहिए।

आस्था से खिलवाड़ विजय सरकार कठघरे में!

तमिलनाडु की राजनीति में एक बार फिर धार्मिक अधिकारों और आस्था का सवाल गरमा गया है। मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय के नेतृत्व वाली सरकार पर हिंदू धार्मिक परंपराओं में हस्तक्षेप और श्रद्धालुओं के अधिकारों की अनदेखी के आरोप गंभीर चिंता पैदा करते हैं। पुडुकोट्टई जिले के लिंगमलाई में 400 वर्ष पुराने शिव मंदिर के निकट प्रस्तावित ईसाई प्रार्थना सभा को लेकर उठा विवाद इसी का उदाहरण है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष नैनार नागेंद्रन ने आरोप लगाया है कि 24 नवंबर को महा कार्तिगई पर्व के दिन बिना अनुमति स्थापित किए गए क्रॉस के पास प्रार्थना सभा आयोजित करने की तैयारी है। उनका दावा है कि यह क्षेत्र चोलकालीन शिलालेखों, प्राचीन मूर्तियों और धार्मिक विरासत के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण है। विरोध करने वाले श्रद्धालु मरिमुथु पर कथित हमले ने मामले को और गंभीर बना दिया है। सवाल यह है कि क्या किसी भी सरकार की जिम्मेदारी केवल राजनीतिक समीकरण साधना है, या नागरिकों की धार्मिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना भी उसका संवैधानिक दायित्व है? यदि किसी धार्मिक आयोजन के लिए अनुमति आवश्यक है, तो नियम सभी समुदायों पर समान रूप से लागू होने चाहिए। किसी एक पक्ष को संरक्षण और दूसरे को उपेक्षा का एहसास लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए खतरनाक है।

हालांकि, आरोपों की निष्पक्ष जांच और सभी पक्षों का पक्ष सुने बिना किसी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित नहीं होगा। लेकिन विजय सरकार को भी अपनी चुप्पी तोड़कर स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ हिंदू आस्था की उपेक्षा नहीं, बल्कि सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान है। सरकार याद रखे-सत्ता स्थायी नहीं होती, लेकिन धार्मिक विरासत और जनता का विश्वास पीढ़ियों तक रहता है।

अमेरिकी चुनाव का संदेश

जन जन विचार
...✍ जयसिंह रावत

अमेरिका के मध्यावधि चुनावों ने एक बार फिर सिद्ध किया है कि लोकतंत्र में लोकप्रियता का शिखर स्थायी नहीं होता और मतदाताओं की अपेक्षाओं की अनदेखी किसी भी शक्तिशाली नेता को महंगी पड़ सकती है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में रिपब्लिकन पार्टी को लगे चुनावी झटके का अर्थ केवल डेमोक्रेटिक पार्टी की सफलता नहीं है।

इसके पीछे अमेरिकी समाज में बढ़ता आर्थिक असंतोष, राजनीतिक ध्रुवीकरण, सत्ता प्रतिष्ठान के प्रति अविश्वास और आम नागरिक की बदलती प्राथमिकताएं हैं। चुनाव परिणामों का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि मतदाता अब राजनीतिक नारों से अधिक अपने जीवन में सुधार चाहते हैं। उन्हें शेयर बाजार की चमक से ज्यादा रसोई का बजट, रोजगार की सुरक्षा और भविष्य की आर्थिक स्थिरता की चिंता है।

आर्थिक विकास नहीं, जीवनयापन की लागत निर्णायक

अमेरिकी अर्थव्यवस्था का विरोधाभास इन चुनावों में स्पष्ट दिखाई दिया। सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, शेयर बाजार की मजबूती और कंपनियों के बढ़ते मुनाफे के बावजूद नागरिक महंगाई से परेशान रहे। ट्रंप ने 2024 में कीमतें नियंत्रित करने और अमेरिकी श्रमिकों के हितों की रक्षा का वादा किया था। लेकिन आयात शुल्क और व्यापारिक टकराव की नीतियों से उपभोक्ताओं तथा कारोबारियों पर दबाव पड़ा। आर्थिक विकास का लाभ सामान्य नागरिक तक नहीं पहुंचता तो चमकदार आंकड़े चुनाव नहीं जिताते। अरबपतियों की संपत्ति बढ़ने का राजनीतिक लाभ तभी मिलता है, जब सामान्य परिवार की क्रयशक्ति भी बढ़े।

ट्रंप का जनाधार क्यों कमजोर पड़ा?

ट्रंप की राजनीतिक सफलता का आधार उनका राष्ट्रवादी आंदोलन था, जिसे 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' अर्थात अमेरिका को फिर महान बनाने के नारे से पहचान मिली। इसने पारंपरिक रिपब्लिकन समर्थकों के अतिरिक्त श्रमिकों, ग्रामीण मतदाताओं और व्यवस्था से निराश लोगों को आकर्षित किया। लेकिन सत्ता में लौटने के बाद चुनावी वादों को व्यवहार में बदलना चुनौती बना।

अवैध प्रवासन पर कठोर कार्रवाई, विदेशी सैन्य हस्तक्षेप से दूरी, सरकारी खर्च में कटौती और आर्थिक पुनरुत्थान उनके प्रमुख वादे थे। अपेक्षाओं और परिणामों के बीच अंतर से समर्थकों में निराशा बढ़ी। विशेषकर हिस्पैनिक मतदाताओं का बदलता रुझान महत्वपूर्ण रहा। इनमें अनेक ने 2024 में ट्रंप का समर्थन किया था, लेकिन प्रवासन संबंधी कार्रवाइयों और आर्थिक दबाव ने उनके एक हिस्से को पुनर्विचार के लिए प्रेरित किया। युवा मतदाताओं और कामकाजी वर्ग में भी असंतोष दिखाई दिया। स्पष्ट हुआ कि व्यक्तिगत आकर्षण और नीतियों के प्रति स्थायी समर्थन अलग बातें हैं।

विचारधारा से अधिक महत्वपूर्ण मतदाता का हित

अमेरिकी चुनावों में स्वतंत्र मतदाताओं की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण हो रही है। रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टियों के बीच वैचारिक विभाजन कायम है, लेकिन इन मतदाताओं के लिए राजनीतिक पहचान से अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न हैं—महंगाई, रोजगार, सरकारी जवाबदेही और नेतृत्व की संवेदनशीलता। डेमोक्रेटिक पार्टी की सफलता को व्यापक वैचारिक समर्थन मानना जल्दबाजी होगी। अनेक मतदाताओं ने संभवत: उसकी नीतियों के समर्थन से अधिक रिपब्लिकन शासन के प्रति असंतोष व्यक्त किया। चुनाव ने सत्तारूढ़ दल के विरुद्ध जनादेश दिया, विपक्ष को बिना शर्त समर्थन नहीं।

प्रवासन और विदेश नीति की सीमाएं

अवैध प्रवासन अमेरिकी राजनीति का संवेदनशील विषय है। सीमा सुरक्षा और आव्रजन कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन को पर्याप्त जनसमर्थन है। लेकिन कठोर प्रवर्तन, मानवीय अधिकारों और प्रशासनिक जवाबदेही में संतुलन बिगड़ने पर समर्थन कमजोर पड़ सकता है। विदेश नीति में भी ट्रंप की छवि को चुनौती मिली।

उनके समर्थकों का महत्वपूर्ण वर्ग विदेशी युद्धों और महंगे सैन्य हस्तक्षेपों का विरोध करता रहा है। ईरान के साथ युद्ध तथा उससे उत्पन्न आर्थिक और रणनीतिक अनिश्चितताओं ने इस वर्ग की अपेक्षाओं को प्रभावित किया। ऊर्जा कीमतों, व्यापार और महंगाई पर अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के प्रभाव ने विदेश नीति को नागरिकों के आर्थिक हितों से जोड़ दिया।

अरबपतियों का प्रभाव व कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौती

अमेरिकी राजनीति में धनबल का प्रभाव नया नहीं है। चुनावी अभियानों में उद्योगपतियों, वित्तीय संस्थानों और बड़े दानदाताओं की भूमिका विवादास्पद रही है। आर्थिक असमानता बढ़ने के साथ धनाढ्य वर्ग से राजनीतिक निकटता चुनावी नुकसान भी पहुंचा सकती है। बड़े उद्योगपतियों से ट्रंप की निकटता ने उनके जनवादी व्यक्तित्व के सामने विरोधाभास खड़ा किया, जिसके आधार पर उन्होंने श्रमिकों और व्यवस्था से नाराज नागरिकों का समर्थन पाया था।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विशाल आंकड़ा केंद्र भी नया राजनीतिक मुद्दा बने हैं। बिजली और पानी की भारी मांग, स्थानीय संसाधनों पर दबाव तथा उपभोक्ता लागत बढ़ने की आशंकाओं ने प्रौद्योगिकी विकास के सामाजिक परिणामों पर बहस तेज की है।

रिपब्लिकन पार्टी के सामने पहचान का संकट

चुनावी पराजय ने रिपब्लिकन पार्टी के सामने प्रश्न खड़ा किया है कि वह ट्रंप के व्यक्तित्व आधारित राजनीति जारी रखेगी अथवा व्यापक जनहित का नया कार्यक्रम प्रस्तुत करेगी? ट्रंप ने रिपब्लिकन राजनीति को परंपरागत रूढ़िवाद से आगे बढ़ाकर राष्ट्रवाद, आर्थिक संरक्षणवाद और सत्ता प्रतिष्ठान विरोधी भावनाओं से जोड़ा था। चुनावी असफलता ने इस प्रयोग की सीमाएं उजागर की हैं। परंपरागत नेतृत्व, ट्रंप समर्थकों और नए मतदाता समूहों में संतुलन आसान नहीं होगा। केवल प्रचार बदलना पर्याप्त नहीं है। आर्थिक नीतियों, सामाजिक प्राथमिकताओं और राजनीतिक व्यवहार में विश्वसनीय परिवर्तन चाहिए। डेमोक्रेटिक पार्टी के लिए भी आत्मसंतोष का अवसर नहीं है। सत्ता विरोधी मतों को स्थायी समर्थन में बदलने के लिए उसे आर्थिक असमानता, रोजगार और महंगाई पर ठोस विकल्प देने होंगे।

अमेरिकी लोकतंत्र में सत्ता पर नियंत्रण

चुनाव परिणामों का संवैधानिक महत्व भी है। अमेरिकी शासन व्यवस्था राष्ट्रपति, कांग्रेस और सर्वोच्च न्यायालय के बीच शक्तियों के विभाजन तथा नियंत्रण और संतुलन पर आधारित है। कांग्रेस के किसी सदन में विपक्ष का बहुमत होने पर राष्ट्रपति का विधायी कार्यक्रम कठिन हो सकता है। बजट, सरकारी खर्च, संसदीय जांच और नीतिगत निर्णयों पर संघर्ष बढ़ सकता है।

राष्ट्रपति के पास विधेयकों पर वीटो की शक्ति है, लेकिन कांग्रेस की सहमति के बिना वे अपनी प्रत्येक इच्छा को कानून नहीं बना सकते। मध्यावधि चुनाव राष्ट्रपति को पद से हटाए बिना उनकी राजनीतिक शक्ति सीमित कर सकते हैं। यही अमेरिकी संविधान की विशेषता है कि शक्तिशाली कार्यपालिका के बावजूद निर्वाचित विधायिका स्वतंत्र भूमिका निभाती है।

भारत सहित विश्व के लिए सबक

अमेरिकी चुनावों का महत्व उसकी सीमाओं से बाहर भी है। भारत जैसे लोकतंत्रों के लिए पहला संदेश है कि आर्थिक विकास और नागरिक खुशहाली में अंतर नहीं होना चाहिए। दूसरा, व्यक्ति केंद्रित राजनीति में लोकप्रिय नेतृत्व भी जनाकांक्षाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता। तीसरा, विपक्ष की सफलता तभी सार्थक है, जब वह असंतोष को सकारात्मक विकल्प में बदले।

भारत किसी परिवार की बपौती नहीं आत्ममंथन करे विपक्ष : संतोष सुमन

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार सरकार के मंत्री एवं केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी के पुत्र संतोष कुमार सुमन ने कांग्रेस समेत विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा है कि भारत किसी राजनीतिक दल, परिवार या खानदान की बपौती नहीं है, बल्कि 140 करोड़ देशवासियों का लोकतांत्रिक गणराज्य है। कांग्रेस को यह गलतफहमी छोड़ देनी चाहिए कि देश की सत्ता और राजनीति पर उसका कोई पुश्तैनी अधिकार है।

संतोष कुमार सुमन ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट कर विपक्षी दलों को आत्ममंथन करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि देश संविधान, लोकतांत्रिक मूल्यों और जनता की सामूहिक शक्ति से चलता है। लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है और राजनीतिक दल उसके प्रतिनिधि हैं। जनता जब कांग्रेस को सत्ता सौंपती है तो वह जनादेश होता है और जब किसी दूसरे दल को चुनती है, तब उस



फैसले पर सवाल उठाना दोहरे मापदंड को दर्शाता है।

व्यक्तिवाद और राजनीतिक अहंकार छोड़ने की सलाह

मंत्री ने कांग्रेस को व्यक्तिवाद, राजनीतिक अहंकार और निराधार आरोपों की राजनीति छोड़ने की नसीहत दी। उन्होंने कहा कि संवैधानिक संस्थाओं को बार-बार कटघरे में खड़ा करने और जनता के फैसले पर सवाल उठाने से राजनीतिक जवाबदेही से बचा नहीं जा सकता। लोकतंत्र की मर्यादा का सम्मान करना सभी दलों की जिम्मेदारी है।

तेजस्वी, ममता और अखिलेश पर भी निशाना

संतोष सुमन ने विपक्षी गठबंधन के प्रमुख नेताओं पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि विपक्ष की भूमिका केवल विरोध करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसे देश के विकास में सकारात्मक योगदान देना चाहिए। उन्होंने तेजस्वी यादव, ममता बनर्जी, अरविंद केजरीवाल, अखिलेश यादव और उद्धव ठाकरे को भी अपनी राजनीति के एजेंडे पर आत्ममंथन करने की सलाह दी। विपक्ष की मौजूदा राजनीति पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि पूरा विपक्ष हारे हुए जुआरियों के उस कुनबे की तरह व्यवहार कर रहा है, जो हार स्वीकार करने के बजाय खेल और व्यवस्था पर ही सवाल उठाने लगता है।

विकास का विकल्प पेश करे विपक्ष

मंत्री ने कहा कि देश को विकास का विकल्प चाहिए, न कि केवल सत्ता हासिल करने के उद्देश्य से एकजुट हुए राजनीतिक दलों का गठबंधन। जनता के फैसले को स्वीकार करने के बजाय बार-बार व्यवस्था पर सवाल उठाने की प्रवृत्ति लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए उचित नहीं है। उन्होंने विपक्ष से स्पष्ट नीतियां और विकास का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने की अपील की।

हार के बाद अभिषेक झा ने मतदाताओं का जताया आभार

जन जन विचार
...✍ वरुण कुमार, मुजफ्फरपुर



तिरहुत स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद जदयू-एनडीए के प्रत्याशी रहे अभिषेक झा ने मतदाताओं, समर्थकों और शुभचिंतकों के प्रति आभार जताया है। उन्होंने कहा कि चुनाव में भले ही उन्हें हार का सामना करना पड़ा हो, लेकिन तिरहुत के लोगों से उनका रिश्ता पहले की तरह कायम रहेगा। चुनाव में एक प्रत्याशी की हार हुई है, मतदाताओं के साथ उनका संबंध नहीं टूटा है।

अभिषेक झा ने अपने संदेश में कहा कि शिक्षकों, युवाओं, व्यवसायियों, चिकित्सकों, अधिवक्ताओं और किसानों सहित समाज के सभी वर्गों ने प्रथम और द्वितीय वरीयता के माध्यम से उन्हें जो समर्थन और विश्वास दिया, उसके लिए वे हमेशा आभारी रहेंगे। उन्होंने भरोसा दिलाया कि चुनाव परिणाम के बाद भी वे लोगों के बीच रहेंगे और उनके सुख-दुःख में सहभागी बनेंगे।

4700 मतों के निरस्त होने पर उठाए सवाल

चुनाव प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए अभिषेक झा ने दावा किया कि उनके पक्ष में पड़े करीब 4700 मत केवल उनके नाम के सामने टिक का निशान लगाए जाने के कारण अवैध घोषित कर दिए गए। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में मतों का इस तरह निरस्त होना गंभीर विचार का विषय है। उनके अनुसार, यदि ये मत वैध माने गए होते तो चुनाव परिणाम अलग हो सकता था।

एनडीए के भीतर राजनीतिक चक्रव्यूह की आशंका

अभिषेक झा ने एनडीए के भीतर की राजनीतिक परिस्थितियों को लेकर भी अपनी नाराजगी और पीड़ा जाहिर की। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या वे अपने ही राजनीतिक परिवार के भीतर रचे गए चक्रव्यूह में अभिमन्यु की तरह अकेले पड़ गए थे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

खाकी और काले कोट में...

शीतल की बहन श्वेता भाटी के अनुसार, कुछ समय बाद वकीलों का एक समूह सैलून पहुंचा और वहां तोड़फोड़ तथा मारपीट की। परिवार का आरोप है कि उस समय आठ महीने की गर्भवती शीतल के साथ भी दुर्व्यवहार किया गया। परिवार ने पुलिस से शिकायत की और शाहदरा थाने पहुंचा।

परिवार का आरोप है कि थाने के भीतर भी राहुल और विजय के साथ मारपीट की गई। दूसरी ओर, अधिवक्ताओं का कहना है कि इसी घटनाक्रम के दौरान अधिवक्ता ललित बंसल के सिर में गंभीर चोट लगी। इस मामले में दर्ज प्राथमिकी में सैलून संचालक राहुल का नाम आरोपित के रूप में शामिल बताया गया है। दोनों पक्षों के आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि जांच और उपलब्ध साक्ष्यों से ही हो सकेगी।

वकीलों ने पुलिस पर लगाए पक्षपात के आरोप

दिल्ली के जिला अदालतों के बार संगठनों का आरोप है कि पुलिस ने मारपीट के मामले में उचित कार्रवाई नहीं की। अधिवक्ताओं के अनुसार, पुलिस अधिकारियों ने आरोपितों की गिरफ्तारी का भरोसा दिया था, लेकिन अगले दिन उन्हें पता चला कि संबंधित लोगों को गिरफ्तार नहीं किया गया और कथित तौर पर छोड़ दिया गया।

इसके बाद वकीलों का एक समूह शाहदरा थाने पहुंचा। बार संगठनों का आरोप है कि इसी दौरान एसीपी मनस्वी वशिष्ठ ने अधिवक्ताओं के सामने अपना सरकारी रिवॉल्वर दिखाया और उन्हें डराने की कोशिश की। इस आरोप के बाद दिल्ली की विभिन्न जिला अदालतों के बार संगठनों की समन्वय समिति ने संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए अनिश्चितकालीन न्यायिक कार्य बहिष्कार शुरू कर दिया।

वकीलों की मांगों में एसीपी और शाहदरा थाने के तत्कालीन थाना प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार के खिलाफ कार्रवाई भी शामिल थी।

पुलिस का जवाबी आरोप

पुलिस ने भी इस मामले में अपना पक्ष रखा। एसीपी मनस्वी वशिष्ठ की शिकायत के आधार पर करीब 15 से 20 वकीलों के खिलाफ कथित दुर्व्यवहार, गाली-गलौज और सरकारी काम में बाधा डालने के आरोप में मामला दर्ज किया गया।

पुलिस की शिकायत के अनुसार, वकीलों का एक समूह थाना प्रभारी के कक्ष में पहुंचा और अधिकारियों पर दबाव बनाने लगा। पुलिस का आरोप है कि कुछ अधिवक्ताओं ने अधिकारियों के साथ अभद्र व्यवहार किया और थाना प्रभारी को हाथ से खींचने की कोशिश की।

इस प्रकार दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर गंभीर आरोप लगाए हैं। वकीलों ने पुलिस पर पक्षपात और धमकी देने का आरोप लगाया, जबकि पुलिस ने जांच में दबाव बनाने और सरकारी काम में बाधा डालने की बात कही। इन आरोपों को अभी जांच के निष्कर्ष के रूप में नहीं देखा जा सकता।

तबादले के बाद वकीलों की हड़ताल खत्म

विवाद बढ़ने पर 28 अक्टूबर को दिल्ली पुलिस ने एसीपी मनस्वी वशिष्ठ का तबादला गांधी नगर उपमंडल से महिला एवं बाल विशेष पुलिस इकाई (एसपीयूडब्ल्यूएसी) में कर दिया। शाहदरा थाने के तत्कालीन थाना प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार को सुरक्षा इकाई में भेजा गया। तबादले के आदेश के बाद जिला अदालतों के वकीलों ने अपना अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार समाप्त कर दिया। हालांकि, पुलिस विभाग के भीतर इन तबादलों को लेकर असंतोष सामने आने लगा।

पुलिसकर्मी अपने ही मुख्यालय के बाहर जुटे

2 नवंबर को दिल्ली पुलिस मुख्यालय के बाहर असामान्य दृश्य देखने को मिला। स्थानांतरित अधिकारियों के समर्थन में करीब 100 से 150 पुलिसकर्मी मुख्यालय के बाहर जुटे। प्रदर्शनकारियों की मांग थी कि एसीपी मनस्वी वशिष्ठ और निरीक्षक अरुण कुमार के तबादले वापस लिए जाएं।

पुलिसकर्मियों ने थानों और अदालत परिसरों में अपने साथ होने वाले कथित दुर्व्यवहार, जांच के दौरान दबाव तथा सुरक्षा से जुड़े मुद्दे उठाए। उन्होंने पुलिसकर्मियों की शिकायतों के समाधान के लिए व्यवस्था बनाने और पुलिस-वकील विवादों से निपटने के लिए स्पष्ट कार्यप्रणाली तय करने की मांग की।

प्रदर्शन के दौरान एसीपी वशिष्ठ भी मौजूद रहे। पुलिसकर्मियों ने पुलिस आयुक्त अनुराग कुमार से मुलाकात कर अपनी मांगें रखीं। पुलिस प्रशासन की ओर से इसे पुलिसकर्मियों की समस्याएं सुनने के लिए आयोजित संपर्क सभा से भी जोड़ा गया। हालांकि, प्रदर्शन का तात्कालिक कारण दोनों अधिकारियों के तबादले के खिलाफ असंतोष था।

गृह मंत्रालय ने एसीपी को किया निलंबित

प्रदर्शन के अगले दिन, 3 नवंबर को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एसीपी मनस्वी वशिष्ठ को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। आधिकारिक आदेश में लंबित विभागीय कार्यवाही का उल्लेख किया गया है। आदेश के अनुसार, केंद्रीय सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम, 1965 के नियम 10 के तहत निलंबन की कार्रवाई की गई। निलंबन आदेश में संबंधित अधिकारी के खिलाफ विभागीय कार्यवाही लंबित होने की बात कही गई है। हालांकि, आदेश में आरोपों का विस्तृत ब्योरा नहीं दिया गया। इसलिए निलंबन को किसी आरोप की अंतिम पुष्टि या दोषसिद्धि नहीं माना जा सकता। यह विभागीय कार्रवाई है, जिसके बाद जांच और आगे की प्रक्रिया होनी है।

अपनी अलग सियासी लकीर खींच रहे चिराग पासवान

जन जन विचार
...✍पटना

बिहार विधान परिषद चुनाव के नतीजों के बाद एनडीए के भीतर सियासी खींचतान एक बार फिर सामने आ गई है। शिक्षक और स्नातक निर्वाचन क्षेत्रों में जीत दर्ज करने वाले निर्दलीय उम्मीदवारों बंशीधर ब्रजवासी और राहुल राज को लेकर भाजपा और जदयू के बीच विवाद गहराता दिख रहा है। दोनों नेताओं के भाजपा को समर्थन देने की खबरों के बीच लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रमुख एवं केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने भाजपा के साथ-साथ दोनों निर्दलीय एमएलसी के फैसले पर भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने इसे गठबंधन धर्म से जोड़ते हुए भाजपा की भूमिका पर सवाल खड़े किए हैं।

चिराग पासवान का यह रुख कोई नया नहीं है। एनडीए में शामिल होने के बावजूद वह कई मौकों पर गठबंधन की आधिकारिक राजनीतिक लाइन से अलग अपनी राय रखते रहे हैं। कभी सरकार की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाए तो कभी पुलिस कार्रवाई पर नाराजगी जताई। उनके इन बयानों को लेकर राजनीतिक गलियारों में अक्सर चर्चा होती रही है कि चिराग गठबंधन में रहते हुए अपनी अलग राजनीतिक पहचान बनाए रखने के साथ-साथ सहयोगी दलों पर दबाव भी बनाते हैं।

निर्दलीय एमएलसी के भाजपा को समर्थन पर उठाए सवाल

विधान परिषद चुनाव में जीतने वाले दोनों निर्दलीय एमएलसी को लेकर चिराग पासवान ने गठबंधन धर्म का मुद्दा उठाया है। उनका सवाल है कि जिस पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार को हराकर दोनों नेता चुनाव जीते, उसी गठबंधन की दूसरी पार्टी में शामिल होना कहां तक उचित है? उन्होंने भाजपा से भी पूछा कि गठबंधन के आधिकारिक उम्मीदवार को हराकर जीतने वाले



नेताओं को पार्टी में जगह देना किस तरह गठबंधन धर्म के अनुरूप है?

इस मुद्दे पर जदयू ने भी भाजपा के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया। जदयू नेता एवं एमएलसी नीरज कुमार ने कहा कि दोनों निर्दलीय उम्मीदवारों ने चुनाव में जदयू के आधिकारिक प्रत्याशियों को हराकर जीत हासिल की है। ऐसे में उन्हें भाजपा में शामिल करना गठबंधन धर्म का उल्लेघन है।

हालांकि, विवाद बढ़ने के बाद बंशीधर ब्रजवासी और राहुल राज ने भाजपा में शामिल होने की खबरों को खारिज किया। दोनों ने स्पष्ट किया कि उन्होंने भाजपा की सदस्यता ग्रहण नहीं की है, बल्कि पार्टी को बाहर से समर्थन दिया है।

जमुई की घटना पर अपनी ही सरकार को घेरा

चिराग पासवान इससे पहले जमुई में नाबालिग लड़की के साथ बदसलूकी और छेड़छाड़ की घटना पर अपनी ही सरकार को कठघरे में खड़ा कर चुके हैं। उन्होंने इस घटना पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा था, 'मुझे खुद शर्म आती है कि मैं ऐसी सरकार का हिस्सा हूं।' उन्होंने प्रदेश की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कहा था कि यदि अपराधियों के मन में पुलिस का खौफ नहीं होगा तो कानून-व्यवस्था का क्या मतलब रह जाएगा? उनका यह बयान ऐसे समय आया था, जब विपक्ष पहले से ही इस घटना को लेकर सरकार पर हमलावर था।

मुख्य चुनाव आयुक्त के मुद्दे पर भी अलग रुख

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन के दौरान भी चिराग पासवान ने एनडीए की राजनीतिक लाइन से अलग रुख अपनाया था। उन्होंने कहा था कि देश के युवाओं की ऊर्जा को रोका नहीं जा सकता। विरोध के तरीकों पर सवाल उठाने के बजाय उनके मुद्दों को समझने की जरूरत है। उस समय सरकार और एनडीए के घटक दल मुख्य चुनाव आयुक्त के समर्थन में एकजुट थे। ऐसे माहौल में चिराग का आंदोलन के प्रति सकारात्मक रुख गठबंधन के लिए असहज स्थिति पैदा करने वाला माना गया था।

भरत तिवारी एनकाउंटर पर पुलिस कार्रवाई को घेरा

भरत तिवारी एनकाउंटर के मामले में भी चिराग पासवान ने सरकार और पुलिस की कार्रवाई पर सवाल उठाए थे। वह भरत तिवारी के गांव बिलौटी पहुंचे थे और उनके परिजनों से मुलाकात कर उन्हें न्याय दिलाने का भरोसा दिया था।

छठ के लोकगीतों में रची-बसी है हजारों वर्षों की आस्था और परंपरा

जन जन विचार
...✍वरुण कुमार, पटना

छठ महापर्व की आहट के साथ ही बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश का वातावरण छठी मइया के मधुर लोकगीतों से भक्तिमय होने लगा है। दीपावली के साथ ही घरों में छठ की तैयारियां शुरू हो गई हैं। दूसरे प्रदेशों और विदेशों में रहने वाले लोग भी अपने घर लौटने की तैयारी में जुट गए हैं। ट्रेनों और विमानों में बढ़ती भीड़ इस बात का संकेत है कि छठ महापर्व पर लोगों को अपनी मिट्टी, गांव और परिवार की याद सता रही है। इस बीच मोबाइल और सोशल मीडिया पर छठ गीतों की गूंज भी तेज हो गई है।

आध्यात्मिक गुरु पंडित कमलापति त्रिपाठी प्रमोद के अनुसार, छठ पूजा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय सनातन संस्कृति, वैदिक सूर्य उपासना और लोक आस्था की अत्यंत प्राचीन परंपरा है। इसकी जड़ें वैदिक काल से जुड़ी मानी जाती हैं। ऋग्वेद में सूर्य और उषा की उपासना के मंत्र मिलते हैं। वहीं रामायण और महाभारत काल की धार्मिक मान्यताओं में भी सूर्य आराधना का विशेष उल्लेख मिलता है। सूर्यपुत्र कर्ण की उपासना और द्रौपदी की सूर्य आराधना की कथाएं इस परंपरा की धार्मिक महत्ता को दर्शाती हैं।

पंडित कमलापति त्रिपाठी प्रमोद बताते हैं कि छठ की परंपरा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवंत बनाए रखने में भोजपुरी, मैथिली और मगही के लोकगीतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन गीतों में केवल भक्ति और भावनाएं ही नहीं, बल्कि पूजा की पूरी विधि,

पं. कमलापति त्रिपाठी प्रमोद



नियम, पवित्रता और परंपराएं भी समाहित हैं। नहाय-खाय, खरना, संध्या अर्घ्य और उषा अर्घ्य से लेकर सूप, दउरा, ठेकुआ और अन्य पूजन सामग्रियों का वर्णन लोकगीतों में मिलता है।

लोकगीत हैं छठ की आस्था का जीवंत दस्तावेज

उन्होंने कहा कि छठ गीत केवल मनोरंजन या संगीत का माध्यम नहीं हैं, बल्कि इस महापर्व की सांस्कृतिक विरासत के वाहक हैं। 36 घंटे के निर्जला व्रत के दौरान ये गीत व्रतियों को मानसिक संबल और आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करते हैं। गीतों में छठी मइया से परिवार की सुख-समृद्धि, संतान की रक्षा और आरोग्य की कामना की जाती है। सूर्यदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनके आशीर्वाद की प्रार्थना की जाती है।

उन्होंने बताया कि छठ गीतों की सबसे बड़ी विशेषता इनकी आत्मीयता है। इनमें छठी मइया को परिवार के सदस्य की तरह संबोधित किया जाता है। यही कारण है कि इन गीतों से लोगों का भावनात्मक जुड़ाव इतना गहरा है कि वे जहां भी रहते हैं, छठ गीत सुनते ही अपने गांव, घर और बचपन की यादों में खो जाते हैं।

सनातन परंपरा में संगीत से आराधना का विशेष महत्व

पंडित कमलापति त्रिपाठी प्रमोद के अनुसार, सनातन धर्म में भजन, कीर्तन और गायन के माध्यम से ईश्वर की आराधना की समृद्ध परंपरा रही है। सामवेद से लेकर भक्ति काल तक संगीत को भक्ति और समर्पण का सहज माध्यम माना गया है। छठ पूजा में भी लोकभाषाओं में गाए जाने वाले गीत श्रद्धालुओं की भावनाओं को सीधे सूर्यदेव और छठी मइया तक पहुंचाने का माध्यम बनते हैं।

उन्होंने कहा कि लोकगीतों ने छठ पूजा की परंपराओं और धार्मिक मूल्यों को बिना किसी जटिल कर्मकांड के आम जनमानस तक पहुंचाया है। इन गीतों के माध्यम से नई पीढ़ी भी पूजा के नियम, स्वच्छता, प्राकृतिक सामग्री के उपयोग और पारिवारिक परंपराओं से परिचित होती है।

डिजिटल युग में दुनिया भर में पहुंची छठ गीतों की गूंज

उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक ने छठ महापर्व और इसके लोकसंगीत को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई है। पहले छठ गीत मुख्य रूप से गांवों, घरों और घाटों तक सीमित रहते थे, लेकिन अब यूट्यूब, म्यूजिक ऐप्स और सोशल मीडिया के माध्यम से दुनिया के कोने-कोने में सुने जा रहे हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीय भी डिजिटल माध्यमों से छठ की परंपराओं और उत्सव से जुड़े रहते हैं।

विंध्यवासिनी देवी और शारदा सिन्हा ने दी छठ गीतों को नई पहचान

पंडित कमलापति त्रिपाठी प्रमोद ने कहा कि छठ गीतों को रिकॉर्डिंग के माध्यम से व्यापक पहचान दिलाने में लोकगायिका विंध्यवासिनी देवी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके बाद पद्मभूषण शारदा सिन्हा ने अपनी मधुर आवाज से छठ गीतों को देश-दुनिया के घरों तक पहुंचाया। 'कांच ही बांस के बहंगिया' और 'उग हो सूरज देव' जैसे गीत आज भी छठ महापर्व की पहचान बने हुए हैं।

उन्होंने कहा कि छठ के गीतों में बिहार की मिट्टी की खुशबू, परिवार का अपनापन, प्रकृति के प्रति सम्मान और सूर्यदेव के प्रति समर्पण एक साथ दिखाई देता है। यही वजह है कि छठ केवल बिहार का पर्व नहीं रह गया है, बल्कि जहां-जहां बिहार और पूर्वांचल के लोग बसे हैं, वहां यह आस्था और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बन चुका है। लोकगीतों की मधुरता ही इस महापर्व की आत्मा है, जो आने वाली पीढ़ियों तक इसकी परंपरा को जीवित रखेगी।

राइजिंग स्टार्स एशिया कप में चमकेगा वैभव का सितारा

जन जन विचार
...✍नई दिल्ली

एसीसी मेन्स राइजिंग स्टार्स एशिया कप 2026 के लिए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने 15 सदस्यीय इंडिया ए टीम की घोषणा कर दी है। युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी को टीम में शामिल किए जाने के साथ ही क्रिकेट प्रेमियों की निगाहें एक बार फिर इस उभरते सितारे पर टिक गई हैं। टीम की कमान तिलक वर्मा को सौंपी गई है, जबकि अनुभवी बल्लेबाज रजत पाटीदार उपकप्तान की भूमिका निभाएंगे।

कतर की राजधानी दोहा में 19 से 29 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस टूर्नामेंट में भारत-ए के सामने एशिया की उभरती क्रिकेट प्रतिभाओं के बीच अपनी क्षमता साबित करने की चुनौती होगी। चयनित टीम में अंतर्राष्ट्रय क्रिकेट का अनुभव रखने वाले खिलाड़ियों और घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन करने वाले युवा चेहरों का संतुलित मिश्रण देखने को मिलता है।

अभिषेक, रिंकू और हर्षित को भी मौका

15 सदस्यीय टीम में अभिषेक शर्मा, वैभव सूर्यवंशी, प्रभसिमरन सिंह, तिलक वर्मा, रजत पाटीदार, रिंकू सिंह, कुमार कुशाग्र, सूर्यांश शेडगे, शाहबाज अहमद, विपराज निगम, हर्ष दुबे,



तनुष कोटियन, हर्षित राणा, प्रिंस यादव और अरशद खान को जगह मिली है।

टीम में प्रभसिमरन सिंह और कुमार कुशाग्र दो विकेटकीपर विकल्प हैं। वहीं, सूर्यांश शेडगे, शाहबाज अहमद, विपराज निगम, हर्ष दुबे और तनुष कोटियन टीम को ऑलराउंड विकल्प प्रदान करते हैं। तेज गेंदबाजी की जिम्मेदारी हर्षित राणा, प्रिंस यादव और अरशद खान के कंधों पर होगी।

वैभव पर रहेंगी खास निगाहें

महज 15 वर्ष की उम्र में क्रिकेट जगत में अपनी पहचान बना चुके वैभव सूर्यवंशी के लिए यह टूर्नामेंट एक और महत्वपूर्ण अवसर होगा। अपनी आक्रामक बल्लेबाजी और बड़े शॉट लगाने की क्षमता से चर्चा में आए वैभव को अभिषेक शर्मा और रिंकू सिंह जैसे खिलाड़ियों के साथ ड्रेसिंग रूम साझा करने का मौका मिलेगा।

दूसरी ओर, तिलक वर्मा के सामने कप्तान के रूप में टीम को एकजुट रखने और युवा खिलाड़ियों की प्रतिभा को बेहतर तरीके से सामने लाने की जिम्मेदारी होगी। रजत पाटीदार का अनुभव भी टीम के लिए उपयोगी साबित हो सकता है।

22 नवंबर को भारत-पाकिस्तान मुकाबला

भारत-ए को ग्रुप- बी में पाकिस्तान-ए, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात के साथ रखा गया है। ग्रुप-ए में बांग्लादेश-ए, श्रीलंका-ए, अफगानिस्तान-ए और हांगकांग की टीमें शामिल हैं।

भारत अपने अभियान की शुरुआत 20 नवंबर को नेपाल के खिलाफ करेगा। इसके बाद 22 नवंबर को पाकिस्तान-ए से बहुप्रतीक्षित मुकाबला होगा। भारत का तीसरा ग्रुप मैच 24 नवंबर को यूएई के खिलाफ निर्धारित है।

दोनों ग्रुप की शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी। सेमीफाइनल मुकाबले 26 और 27 नवंबर को खेले जाएंगे, जबकि खिताबी मुकाबला 29 नवंबर को होगा।

इस टूर्नामेंट में भारत-ए के लिए चुनौती केवल खिताब जीतने तक सीमित नहीं होगी, बल्कि युवा और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को बड़े मंच पर अपनी क्षमता दिखाने का अवसर भी मिलेगा। खासकर वैभव सूर्यवंशी का प्रदर्शन भारतीय क्रिकेट के भविष्य की संभावनाओं के लिहाज से चर्चा का केंद्र रहेगा।

अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल को अलविदा कहेंगे क्रिस्टियानो रोनाल्डो

जन जन विचार
...✍लिस्बन/नई दिल्ली

विश्व फुटबॉल के सबसे लोकप्रिय और सफल खिलाड़ियों में शुमार पुर्तगाल के दिग्गज फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास लेने की घोषणा कर दी है। 41 वर्षीय रोनाल्डो का पुर्तगाल की राष्ट्रीय टीम के साथ 23 वर्षों का ऐतिहासिक सफर नवंबर के अंतर्राष्ट्रीय मुकाबलों के बाद समाप्त हो जाएगा। उन्होंने सोशल मीडिया पर भावुक वीडियो संदेश जारी कर राष्ट्रीय टीम की प्रतिष्ठित सात नंबर की जर्सी भविष्य की पीढ़ी को सौंपने का ऐलान किया।

अगस्त 2003 में कजाकिस्तान के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय पदार्पण करने वाले रोनाल्डो ने अपने करियर में पुर्तगाल के लिए 234 मुकाबले खेले और 146 गोल किए। दोनों उपलब्धियां पुरुष अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल में विश्व रिकॉर्ड हैं। वह राष्ट्रीय टीम के लिए सर्वाधिक मैच खेलने और सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी हैं।

रोनाल्डो ने अपने संन्यास की घोषणा करते हुए कहा कि अब राष्ट्रीय टीम की सात नंबर की जर्सी अगली पीढ़ी को सौंपने का समय आ गया है। उन्होंने कहा, 'यह आसान फैसला नहीं था, क्योंकि कुछ फैसले केवल दिमाग से नहीं, बल्कि दिल से भी लिए जाते हैं।'

उन्होंने अपने संदेश में कहा कि 23 वर्षों तक पुर्तगाल की जर्सी पहनना, उसका बचाव



करना और दुनिया के अलग-अलग स्टेडियमों में देश का प्रतिनिधित्व करना उनके लिए सम्मान और जिम्मेदारी की बात रही।

छह विश्व कप में खेलने वाले पहले फुटबॉलर

रोनाल्डो का अंतर्राष्ट्रीय करियर कई ऐसे रिकॉर्डों से भरा है, जिन्हें तोड़ना आने वाले खिलाड़ियों के लिए बड़ी चुनौती होगी। वह छह फीफा विश्व कप में खेलने वाले इतिहास के पहले पुरुष फुटबॉलर बने। उन्होंने 2006 से 2026 तक लगातार छह विश्व कप में पुर्तगाल का प्रतिनिधित्व किया। इन प्रतियोगिताओं में उन्होंने कुल 11 गोल किए।

इसके अलावा उन्होंने छह यूरोपीय चैंपियनशिप में भी हिस्सा लिया। पुर्तगाल को 2016 में यूरो कप का खिताब दिलाने में उनकी अहम भूमिका रही। फाइनल में चोटिल होकर मैदान छोड़ने के बावजूद उन्होंने कप्तान के रूप में टीम का उत्साह बढ़ाया और पुर्तगाल ने पहली बार यूरोप का चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया। उनकी कप्तानी में पुर्तगाल ने 2019 और 2025 में यूईएफए नेशंस लीग का खिताब भी जीता।

विवादों के बीच आया संन्यास का फैसला

रोनाल्डो का यह फैसला पुर्तगाल की टीम के भीतर हालिया विवादों के बाद आया है। पिछले महीने राष्ट्रीय टीम के कोच जॉर्ज जीसस के साथ खेलने के अवसर को लेकर उनका मतभेद सामने आया था। रिपोर्टों के अनुसार, नॉर्वे के खिलाफ मुकाबले में मैदान पर मौका नहीं मिलने के बाद वह टीम कैंप छोड़कर चले गए थे। इसके बाद पुर्तगाल फुटबॉल महासंघ ने उन पर 30 दिनों का निलंबन लगाया था।

हालांकि, रोनाल्डो ने अपने विदाई संदेश में अपने पूरे अंतर्राष्ट्रीय सफर को याद करते हुए प्रशंसकों, साथियों, प्रशिक्षकों और परिवार के प्रति आभार जताया।

क्लब फुटबॉल में जारी रहेगा सफर

अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास का अर्थ रोनाल्डो के फुटबॉल करियर का पूर्ण अंत नहीं है। वह सऊदी अरब के क्लब अल-नासर के लिए खेलना जारी रखेंगे। नवंबर के अंतर्राष्ट्रीय मुकाबलों के बाद वह पुर्तगाल की राष्ट्रीय टीम की ओर से मैदान पर नहीं उतरेंगे, लेकिन क्लब स्तर पर उनकी सक्रियता बनी रहेगी। रोनाल्डो के संन्यास के साथ अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल के एक ऐसे अध्याय का अंत होने जा रहा है, जिसमें व्यक्तिगत रिकॉर्ड, ऐतिहासिक उपलब्धियां, संघर्ष और असाधारण निरंतरता शामिल रही है। उन्होंने पुर्तगाल को यूरोपीय फुटबॉल की शीर्ष शक्तियों में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उनकी विदाई केवल एक खिलाड़ी का संन्यास नहीं, बल्कि फुटबॉल के उस दौर का अंत है, जिसमें सात नंबर की जर्सी दुनिया भर के करोड़ों प्रशंसकों के लिए जुनून और प्रेरणा का प्रतीक बन गई।

दीपावली 2026 : आठ नवंबर को जगमगाएंगे घर-आंगन, प्रदोष काल में होगा मां लक्ष्मी का पूजन

जन जन विचार
...✍ धर्म डेस्क

दीपों का प्रकाश, रंगोली की रंगत, मिठाइयों की मिठास और अपनों के साथ खुशियां बांटने का उत्साह... दीपावली का पर्व भारतीय संस्कृति में उल्लास, आस्था और आध्यात्मिक चेतना का अनूठा संगम है। अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और निराशा पर आशा की विजय का संदेश देने वाला यह महापर्व इस वर्ष 8 नवंबर, रविवार को मनाया जाएगा। कार्तिक मास की अमावस्या को मनाए जाने वाले इस पर्व पर घर-घर में दीप प्रज्वलित किए जाएंगे और धन, वैभव तथा सुख-समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी मां लक्ष्मी एवं प्रथम पूज्य भगवान गणेश की आराधना की जाएगी।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान श्रीराम 14 वर्ष का वनवास पूरा करने के बाद जब माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे, तब उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर पूरे नगर को रोशन किया था। तभी से दीपावली को प्रकाश और खुशियों के पर्व के रूप में मनाने की परंपरा जुड़ी हुई है। हालांकि, इस त्योहार का महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। यह परिवारों को एक साथ लाने, आपसी प्रेम बढ़ाने, रिश्तों में मिठास घोलने और समाज में सकारात्मकता का संचार करने का भी अवसर है।

लक्ष्मी पूजन के लिए क्या है शुभ मुहूर्त?

पंचांग के अनुसार, इस वर्ष कार्तिक अमावस्या तिथि 8 नवंबर को सुबह 11 बजकर 27 मिनट से शुरू होकर 9 नवंबर को रात 12 बजकर 31 मिनट तक रहेगी। अमावस्या तिथि के दौरान प्रदोष काल की उपलब्धता के कारण दीपावली का मुख्य पर्व 8 नवंबर को मनाया जाएगा।

मां लक्ष्मी की पूजा के लिए प्रदोष काल और स्थिर लग्न को विशेष महत्व दिया जाता है। उपलब्ध पंचांग विवरण के अनुसार, इस बार लक्ष्मी पूजन का मुख्य शुभ मुहूर्त शाम 5 बजकर 54 मिनट से 7 बजकर 50 मिनट तक रहेगा।

धार्मिक मान्यताओं में प्रदोष काल को मां लक्ष्मी की आराधना के लिए विशेष फलदायी माना गया है। वहीं, निशीथ काल का महत्व विशेष रूप से रात्रिकालीन धार्मिक अनुष्ठानों और महानिशा पूजा के लिए बताया गया है। श्रद्धालु अपने क्षेत्र के स्थानीय पंचांग और परंपरा के अनुसार पूजा का समय निर्धारित कर सकते हैं।

पूजा से पहले करें घर और पूजा स्थल की तैयारी

दीपावली के अवसर पर घरों की साफ-सफाई का विशेष महत्व है। कई दिनों पहले से ही लोग घरों की सफाई, रंग-रोगन और सजावट में जुट जाते हैं। मान्यता है कि स्वच्छ और व्यवस्थित स्थान पर मां लक्ष्मी का स्वागत किया जाता है।

पूजा के लिए लकड़ी की चौकी, लाल या पीला कपड़ा, मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की प्रतिमाएं, रोली, कुमकुम, हल्दी, चंदन, अक्षत, फूल, फल, पान, सुपारी, नारियल, धूप, अगरबत्ती, कपूर, घी, दीपक, रुई की बत्ती, पंचामृत, गंगाजल, कलश, आम के पत्ते, दूर्वा, जनेऊ और मिठाइयों की व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए। पूजा में सिक्के, नोट, खील-बताशे और कमलगट्टे भी रखे जा सकते हैं।

घर पर कैसे करें मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा?

दीपावली पर पूजा की विधि सरल होने के साथ-साथ श्रद्धा और पवित्रता से जुड़ी हुई है। परिवार के सदस्य मिलकर विधिपूर्वक पूजा कर सकते हैं।

1. पूजा स्थल की स्थापना: घर के पूजा स्थल की अच्छी तरह सफाई करें। परंपरा के अनुसार ईशान कोण में लकड़ी की चौकी रखकर उस पर लाल या पीला कपड़ा बिछाएं। चौकी पर अक्षत रखकर भगवान गणेश और मां लक्ष्मी की प्रतिमाएं स्थापित करें।

2. कलश स्थापना: तांबे या पीतल के कलश में शुद्ध जल और गंगाजल भरें। उसमें सुपारी, सिक्का और अक्षत डालें। कलश के मुख पर आम के पत्ते लगाकर उसे पूजा स्थल के पास स्थापित करें।

3. आचमन और संकल्प : पूजा शुरू करने से पहले स्वयं तथा पूजा सामग्री पर जल छिड़ककर शुद्धि करें। इसके बाद दाहिने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर परिवार की सुख-समृद्धि, शांति और कल्याण की कामना के साथ पूजा का संकल्प लें।

4. सबसे पहले करें गणेश पूजन : किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत भगवान गणेश की पूजा से की जाती है। उन्हें रोली, अक्षत, दूर्वा, पुष्प और मिठाई अर्पित करें। धूप-दीप जलाकर उनका स्मरण करें।

5. मां लक्ष्मी की आराधना : इसके बाद मां लक्ष्मी को लाल पुष्प, कमल, कुमकुम, अक्षत, खील, बताशे, फल और मिठाई अर्पित करें। श्रद्धापूर्वक मां का ध्यान करते हुए परिवार में सुख, शांति और समृद्धि की प्रार्थना करें।

6. कुबेर पूजन : धन के देवता भगवान कुबेर की भी पूजा करें। पूजा में सिक्के, कमलगट्टे और अन्य पारंपरिक सामग्री अर्पित की जा सकती है।

दीपावली 2026 के प्रमुख मुहूर्त

दीपावली पर्व : 8 नवंबर, रविवार
अमावस्या तिथि प्रारंभ : सुबह 11.27 बजे, 8 नवंबर
अमावस्या तिथि समाप्त : रात 12.31 बजे, 9 नवंबर
प्रदोष काल : शाम 5.31 से रात 8.09 बजे तक
वृषभ काल (स्थिर लग्न) = शाम 5.54 से 7.50 बजे तक
मुख्य लक्ष्मी पूजन मुहूर्त : शाम 5.54 से 7.50 बजे तक
निशीथ काल : रात 11.39 से 12.31 बजे तक



क्यों की जाती है लक्ष्मी-गणेश की पूजा?

दीपावली की रात मां लक्ष्मी के साथ भगवान गणेश की पूजा करने की परंपरा है। मां लक्ष्मी को धन, ऐश्वर्य और समृद्धि की देवी माना जाता है, जबकि भगवान गणेश बुद्धि, विवेक और विघ्नों को दूर करने वाले देवता हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, जीवन में धन के साथ सद्बुद्धि और विवेक का होना भी आवश्यक है। इसी भाव के साथ दोनों देवताओं की एक साथ पूजा की जाती है।

माना जाता है कि दीपावली की अमावस्या की रात मां लक्ष्मी की विधिवत आराधना करने से घर में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है। यही वजह है कि लोग इस दिन अपने घरों, प्रतिष्ठानों और व्यापारिक संस्थानों में विशेष पूजा-अर्चना करते हैं।

दीपावली

दीपावली प्रकाश का पावन त्योहार है,
खुशियों, शांति व आनंद का उपहार है।
न प्रदूषण फैलाएँ, न शोर मचाएँ,
आओ, इस पर्व पर प्रकृति को भी मुस्कुराएँ।
आतिशबाजी से परहेज करें, जागरूकता फैलाएँ,
दया और संवेदना से अपना संसार सजाएँ।
समाज को बचाएँ, स्वच्छ हवा का संकल्प लें,
पेड़-पौधों की रक्षा करें, प्रेम से उनका पालन करें।
धरती का बढ़ता तापमान कम करने का प्रयास करें,
माँ प्रकृति का हर दिन सम्मान और संरक्षण करें।
स्वस्थ, स्वच्छ और सुंदर भविष्य की आस जगाएँ,
प्रेम, सद्भाव और उल्लास से दीपावली मनाएँ।

-गोविंद कुमार विश्वास
मालीगांव, गुवाहाटी-12

स्वागतम

शुभ आगमन
सजावट की तैयारी
राम का राज्याभिषेक चमकता
दीपावली सही रूप मुस्कान है
आदर,कर्तव्य, व्यवहार,परिश्रम
यही सच्चा त्योहार
दीप जलें
खुशहाल।

त्योहार का उत्सव दीप है

दीप जीवन की सफलता
आँगन-आँगन चमके
सही रूप
मंगलमय
ज्योति दीप
हर आँगन
धर्म का तिरंगा
साँस-साँस द्वीप चमके
आओ, धर्म का त्योहार निभायें।

-सुश्री रजनी शर्मा,दाधिच
गुवाहाटी, 986497399



ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

Guwahati, 06 November, 2026 Friday :: শুক্রবাৰ, কাতি, কৃষ্ণ পক্ষ, দ্বাদশী, শকাব্দ ১৯৪৮



হোটেলত পাঁচজনক হত্যা, অভিযুক্তৰ এনকাউণ্টাৰ-প্রশ্নৰ সন্মুখত অসম আৰক্ষী

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

অসমত আইন-শৃংখলাৰ পৰিস্থিতি আৰু আৰক্ষীৰ অভিযানৰ স্বচ্ছতাক লৈ পুনৰ চর্চা আৰম্ভ হৈছে। গুৱাহাটীৰ এখন হোটেলত পাঁচজন লোকক গুলীয়াই হত্যা কৰাৰ ভয়ংকৰ ঘটনাৰ নদিনৰ পাছত এই হত্যাকাণ্ডৰ মূল অভিযুক্ত ঘনকান্ত গগৈৰ শিৰসাগৰ জিলাত আৰক্ষীৰ গুলীত মৃত্যু হোৱাক কেন্দ্র কৰি নতুন বিতর্কৰ সৃষ্টি হৈছে। আৰক্ষীৰ মতে, জিম্মাৰ পৰা পলায়নৰ চেষ্টা কৰি আৰক্ষীৰ অস্ত্র কাঢ়ি গুলীচালনা কৰিবলৈ লোৱাৰ সময়তে আত্মৰক্ষাৰ বাবে আৰক্ষীয়ে গুলী চলায়। কিন্তু আদালতে ন্যায়িক জিম্মালৈ প্রেৰণ কৰা এজন অভিযুক্তৰ মৃত্যু কেনেকৈ আৰক্ষীৰ জিম্মাত হল, সেই প্রশ্নই এতিয়া বিশেষ গুৰুত্ব লাভ কৰিছে।

ঘটনাৰ আৰম্ভণি হৈছিল যোৱা ২৬ অক্টোবৰৰ নিশা। গুৱাহাটীৰ বৰা চাৰ্ভিচ অঞ্চলৰ হোটেল বিলাস ইনত সংঘটিত গুলীচালনাত পাঁচজন লোক নিহত আৰু এজন আহত হৈছিল। নিহতসকলৰ ভিতৰত আছিল হোটেলখনৰ স্বত্বাধিকাৰী পৰিয়ালৰ চাৰিজন সদস্য-ভূদেৱ ভৰালী (৬৫), হেলেনা ভৰালী (৫৮), তেওঁৰ পুত্র দেৱর্ষি কাশ্যপ (৩৯) আৰু বোৱাৰী বিণিকা কাশ্যপ (৩০)। পৰিয়ালটোৰ কর্মচাৰী নাৰায়ণ দাস (৪৮) -ও এই ঘটনাত নিহত হয়। গুলীত আহত সত্যেন্দ্র পাঠক চিকিৎসালয়ত ভর্তি কৰোৱা হৈছিল।

আৰক্ষীৰ প্রাথমিক তদন্ত অনুসৰি, হোটেলখনৰ লীজ আৰু পৰিচালনাক লৈ মালিক পক্ষ আৰু লীজ গ্রহণ কৰা ঘনকান্ত গগৈৰ মাজত দীর্ঘদিন ধৰি বিবাদ চলি আছিল। ২৬ অক্টোবৰত বিবাদ নিষ্পত্তিৰ বাবে অনুষ্ঠিত হবলগীয়া বৈঠকৰ পূর্বে তর্ক-বিতর্কৰ মাজতে গুলীচালনাৰ ঘটনা সংঘটিত হয় বুলি আৰক্ষীয়ে



জানিবলৈ দিয়ে। ঘটনাৰ পাছতে অভিযুক্তক গ্রেপ্তাৰ কৰি তেওঁৰ পৰা অনুজ্ঞাপত্র থকা .৩২ বৰৰ পিস্তল জব্দ কৰা হৈছিল। তদন্তৰ বাবে অসম আৰক্ষীয়ে ছয়জনীয়া বিশেষ তদন্তকাৰী দল (SIT) গঠন কৰিছিল।

আদালতৰ জিম্মাৰ পৰা আৰক্ষীৰ গুলীলৈ

ঘটনাটোৰে অধিক গুৰুত্ব লাভ কৰে ৪ নৱেম্বৰৰ পুৱতি নিশা। সাতদিনীয়া আৰক্ষীৰ জিম্মা শেষ হোৱাৰ পাছত ৩ নৱেম্বৰত গুৱাহাটীৰ আদালতে ঘনকান্ত গগৈক ১৪ দিনৰ ন্যায়িক জিম্মালৈ প্রেৰণ কৰিছিল। কিন্তু ২০২৪ চনৰ বেংক জালিয়াতিৰ আন এটা গোচৰৰ তদন্তৰ বাবে শিৰসাগৰ আৰক্ষীয়ে তেওঁক পুনৰ নিজৰ জিম্মালৈ লৈ যায়।

আৰক্ষীৰ ভাষ্য অনুসৰি, গুৱাহাটীৰ পৰা শিৰসাগৰলৈ নিয়াৰ পথত গৌৰীসাগৰ অঞ্চলৰ ওচৰত গাড়ীখন ৰখাবলৈ কৈ অভিযুক্তই প্রস্রাৰ কৰিবলৈ নামিছিল। সেই সময়তে তেওঁ তদন্তকাৰী বিষয়াৰ সেৱা-অস্ত্র কাঢ়ি লবলৈ চেষ্টা কৰে আৰু তিনিজাই গুলীচালনা কৰে। এই ঘটনাত উপ-পৰিদর্শক দেৱাশিস শর্মা আহত হয়। আৰক্ষীৰ মতে, বিষয়াজনৰ জীৱন ৰক্ষা আৰু অভিযুক্তৰ পলায়ন ৰোধ কৰিবলৈ আৰক্ষীয়ে প্রত্যুত্তৰত গুলী চলায়। গুলীবিদ্ধ গগৈক চিকিৎসালয়লৈ নিয়া হয় যদিও চিকিৎসকে মৃত ঘোষণা কৰে।

আদালতৰ নির্দেশৰ পাছতো কিয় উঠিছে প্রশ্ন?

এই ঘটনাৰ এটা গুৰুত্বপূর্ণ দিশ হল, অভিযুক্তৰ অধিবক্তাই তেওঁৰ সুৰক্ষাক লৈ আশংকা প্রকাশ কৰাৰ পাছত আদালতে আৰক্ষীক বিশেষ সাৱধানতা অবলম্বনৰ নির্দেশ দিছিল। নিশাৰ সময়ত অভিযুক্তক কোনো তথ্য উদ্ধাৰৰ বাবে বাহিৰলৈ নিলে পর্যাপ্ত নিৰাপত্তা বাহিনী আৰু উপ-আৰক্ষী অধীক্ষক পর্যায়ৰ বিষয়াৰ উপস্থিতি নিশ্চিত কৰা, জিম্মাত নির্যাতন নকৰা আৰু প্রতি ২৪ ঘণ্টাৰ মূৰে মূৰে চিকিৎসা পৰীক্ষা কৰোৱাৰ নির্দেশ দিয়া হৈছিল বুলি সংবাদ প্রতিবেদনত প্রকাশ পাইছে।

এনে পৰিস্থিতিত অভিযুক্তৰ মৃত্যু সম্পর্কে আৰক্ষীৰ ভাষ্যৰ লগতে ঘটনাৰ নিৰপেক্ষ পৰীক্ষা, চিকিৎসা আৰু মৰণোত্তৰ পৰীক্ষাৰ প্রতিবেদন, ঘটনাস্থলীৰ ফৰেনছিক তথ্য আৰু সংশ্লিষ্ট আৰক্ষী দলৰ ভূমিকা পৰীক্ষা কৰাটোও গুৰুত্বপূর্ণ হৈ পৰিছে।

অপৰাধ নিয়ন্ত্রণ নে আইনী প্রক্রিয়াৰ পৰীক্ষা?

গুৱাহাটীৰ হোটেলত পাঁচজন নিৰীহ লোকৰ মৃত্যু ৰাজ্যৰ অপৰাধ নিয়ন্ত্রণ ব্যৱস্থাৰ বাবে এক গুৰুতৰ সতর্কবাণী। আনহাতে, অভিযুক্তৰ আৰক্ষীৰ গুলীত মৃত্যু হোৱাটোৱে আইন প্রয়োগকাৰী সংস্থাৰ জবাবদিহিতাৰ প্রশ্নও আগলৈ আনিছে। কোনো অভিযুক্তৰ বিৰুদ্ধে গুৰুতৰ অভিযোগ থাকিলেও তেওঁৰ ক্ষেত্রত আইনৰ নির্ধাৰিত প্রক্রিয়া মানি চলাটো আৰক্ষীৰ দায়িত্ব।

এতিয়া প্রশ্ন কেৱল এয়াই নহয় যে অভিযুক্তই পলায়নৰ চেষ্টা কৰিছিল নে নাই; সেই দাবীৰ সমর্থনত কি কি প্রমাণ আছে, আৰক্ষীৰ গুলীচালনাৰ পৰিস্থিতি কেনে আছিল আৰু ঘটনাটোৰ তদন্ত কিমান স্বচ্ছভাৱে সম্পন্ন হয়-সেই সকলো কথাই স্পষ্ট হব লাগিব।

ৰাজধানী গুৱাহাটীৰ জনসাধাৰণৰ বাবে নিৰাপত্তা নিশ্চিত কৰাটো যেনেকৈ জৰুৰী, তেনেকৈ আৰক্ষীৰ প্রতিটো অভিযান আইনৰ আওতাত আৰু জবাবদিহিতাৰ মাজত থকাটোও সমানেই প্রয়োজনীয়। অপৰাধীৰ বিৰুদ্ধে কঠোৰ ব্যৱস্থা আৰু আইনৰ শাসন-দুয়োটাৰ মাজত কোনো বিৰোধ থাকিব নোৱাৰে।

৮ নৱেম্বৰত ভঙাগড় কালী মন্দিৰৰ ৪৪সংখ্যক বার্ষিক পূজা

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

নতুনকৈ প্রতিষ্ঠা কৰা মার্বলৰ প্রতিমাৰ প্রাণ প্রতিষ্ঠা, দিনজোৰা কার্যসূচীৰে পূজাৰ আয়োজন

গুৱাহাটী মেডিকেল কলেজ পথৰ প্ররেশদ্বাৰত অৱস্থিত ঐতিহ্যমণ্ডিত ভঙাগড় কালী মন্দিৰৰ ৪৪সংখ্যক বার্ষিক শ্রীশ্রী মা কালী পূজা অহা ৮ নৱেম্বৰত দিনজোৰা কার্যসূচীৰে অনুষ্ঠিত হ'ব। এই কথা জানিবলৈ দিছে মন্দিৰ সমিতিৰ সাধাৰণ সম্পাদক শশীন্দ্র কুমাৰ বৰুৱাই।

এই উপলক্ষে পুৱা ৯ বজাৰ পৰা জল আহৰণৰ কার্যসূচী আৰম্ভ হ'ব। ইয়াৰ পিছতে সম্পূর্ণ বৈদিক ৰীতি-নীতিৰে নৱনির্মিত মার্বলৰ প্রতিমূর্তিত প্রাণ প্রতিষ্ঠা কৰা হ'ব। দিনৰ ১ বজাত হোম-যজ্ঞ আদি ধর্মীয় অনুষ্ঠানৰ সামৰণিৰ পিছত ভক্তসকলৰ মাজত অঞ্জলি আৰু প্রসাদ বিতৰণ কৰা হ'ব।

ইয়াৰ পিছত ওজাপালিৰ তিনিটা বিশেষ কার্যসূচী অনুষ্ঠিত হ'ব। সন্ধিয়া ৭ বজাৰ পৰা আৰম্ভ হ'ব মাৰ বার্ষিক পূজা। নিশা মহাকালৰ পূজা-অর্চনাৰ অন্তত পুষ্পাঞ্জলি, প্রসাদ আৰু ভোগ বিতৰণ কৰা হ'ব।

আনহাতে, মাৰ প্রতিমূর্তি প্রতিষ্ঠাৰ ক্ষেত্রত বিশেষ সহযোগিতা আগবঢ়োৱা কেইবাগৰাকীও ব্যক্তিক মন্দিৰ সমিতিৰ তৰফৰ পৰা বিশেষভাৱে সম্বর্ধনা জনোৱা হ'ব।

মন্দিৰ সমিতিয়ে উক্ত দিনাৰ সকলো ধর্মীয় আৰু সাংস্কৃতিক কার্যসূচীত ভক্তপ্রাণ ৰাইজৰ উপস্থিতি, সহযোগিতা আৰু অংশগ্রহণ আন্তৰিকতাৰে কামনা কৰিছে।

চেন্নাইলৈ গৈছিল দম্পতী, ঘৰলৈ উভতিল দুয়োৰে নিথৰ দেহ

জন জন বিচাৰ
...✍ নগাঁও

দুচকুত আছিল উন্নত জীৱনৰ সপোন, মনত আছিল পৰিয়ালক সুখেৰে ৰখাৰ আশা। সেই আশাকে সাৰথি কৰি প্ৰায় এবছৰ পূৰ্বে কৰ্মসংস্থাপনৰ সন্ধানত অসমৰ পৰা চেন্নাইলৈ গৈছিল এহাল দম্পতী। কিন্তু জীৱিকাৰ সন্ধানত ঘৰৰ পৰা ওলাই যোৱা দম্পতীহাল অৱশেষত ঘৰলৈ উভতিল কফিনত বন্দী হৈ। এই হৃদয়বিদাৰক ঘটনাই শোকস্তব্ধ কৰি তুলিছে নগাঁও জিলাৰ বটদ্ৰৱাৰ ধনীয়াভেটি গাঁৱৰ চৌৰাপাৰা অঞ্চল।

মৃত দম্পতীহাল হৈছে নিজাম উদ্দিন আৰু তেওঁৰ পত্নী মাছুমা খাতুন। কৰ্মসূত্ৰে চেন্নাইত বাস কৰি থকা দম্পতীহালৰ ৰহস্যজনক মৃত্যুক কেন্দ্ৰ কৰি এতিয়া অঞ্চলটোত তীব্ৰ চাঞ্চল্যৰ সৃষ্টি হৈছে। তেওঁলোকৰ মৃত্যুৰ প্ৰকৃত কাৰণক লৈ সন্দেহ প্ৰকাশ কৰিছে স্থানীয় গাঁওবাসীয়ে। একাংশ গাঁওবাসীৰ আশংকা, পৰিকল্পিত ষড়যন্ত্ৰৰ অংশ হিচাপে দম্পতীহালক হত্যা কৰা হ'ব পাৰে। অৱশ্যে এই অভিযোগৰ সত্যতা এতিয়াও নিশ্চিত হোৱা নাই।

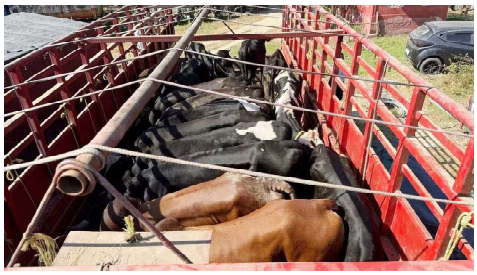
ঘটনাটোৰে আটাইতকৈ মৰ্মান্তিক কৰি তুলিছে দম্পতীহালৰ দুই কণমানি সন্তানৰ ভৰিষ্যৎ। পিতৃ-মাতৃৰ স্নেহ আৰু আশ্ৰয়ৰ পৰা চিৰদিনৰ বাবে বঞ্চিত হোৱা শিশুদুটিক লৈ এতিয়া গভীৰ চিন্তাত পৰিছে পৰিয়ালৰ লোকৰ লগতে গাঁওবাসী।

ইফালে, নগাঁও জিলা প্ৰশাসন আৰু বটদ্ৰৱা আৰক্ষীৰ হস্তক্ষেপত ৰাজ্য চৰকাৰৰ 'শ্ৰদ্ধাঞ্জলি' আঁচনিৰ অধীনত মৃতদেহ দুটা চেন্নাইৰ পৰা নিজ গাঁওলৈ অনাৰ ব্যৱস্থা কৰা হয়। এইব্যৱস্থাৰ ফলত পৰিয়ালৰ লোকে শেষবাৰৰ বাবে আপোনজনক নিজ ভূমিতে অন্তিম বিদায় জনোৱাৰ সুযোগ লাভ কৰে।

দম্পতীহালৰ মৃত্যুৰ আঁৰৰ প্ৰকৃত ৰহস্য উদঘাটনৰ বাবে এক নিৰপেক্ষ আৰু বিস্তৃত তদন্তৰ দাবী জনাইছে স্থানীয় বাইজে। ঘটনাৰ সৈতে জড়িত দোষীসকলক চিনাক্ত কৰি কঠোৰ শাস্তি প্ৰদানৰো দাবী উত্থাপন কৰিছে তেওঁলোকে।

জীৱিকাৰ সন্ধানত বহিঃৰাজ্যলৈ যোৱা অসমৰ শ্ৰমিকৰ সুৰক্ষা আৰু নিৰাপত্তাক লৈ এই ঘটনাই পুনৰ গুৰুতৰ প্ৰশ্নৰ অৱতাৰণা কৰিছে। বিশেষকৈ পৰিয়ালৰ ভৰণ-পোষণৰ বাবে দূ�ৰ-দূৰণিলৈ যোৱা শ্ৰমিকসকলৰ নিৰাপত্তা নিশ্চিত কৰাৰ ক্ষেত্ৰত সংশ্লিষ্ট কৰ্তৃপক্ষৰ দায়িত্বৰ বিষয়টোও নতুনকৈ চৰ্চালৈ আহিছে।

দৌলাশালত ১৭ টা গৰুসহ ট্ৰাক জব্দ, এজনক গ্ৰেপ্তাৰ



জন জন বিচাৰ
...✍ আমজাদ হুছেইন, ৰৰক্ষেত্ৰী

নলবাৰী জিলাৰ মুকালমুৱাৰ দৌলাশালত দৌলাশাল আৰক্ষী চকীৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত আৰক্ষী বিষয়া জ্যোতি কমল বণিয়াৰ নেতৃত্বত আৰক্ষীৰ এটা দলে অভিযান চলাই অবৈধভাৱে গৰু সৰবৰাহ কৰাৰ অভিযোগত ১৭টা গৰুসহ এখন ট্ৰাক জব্দ কৰাৰ লগতে এই ঘটনাৰ সৈতে জড়িত থকাৰ অভিযোগত এজন লোকক গ্ৰেপ্তাৰ কৰিছে। প্ৰাপ্ত তথ্য অনুসৰি, যোৱা বুধবাৰে দৌলাশাল আৰক্ষীয়ে এ এছ ০১ আৰ ছি ৬০৭৪ নম্বৰৰ এখন ট্ৰাক জব্দ কৰে। ট্ৰাকখনত ১৭টা গৰু অতি নিষ্ঠুৰ আৰু অমানৱীয়ভাৱে কঢ়িয়াই নিয়াৰ অভিযোগ উত্থাপন হৈছে। আনহাতে, ট্ৰাকখনক এছকৰ্ট কৰি নিয়াৰ অভিযোগত এ এছ ০১ এফ ডব্লিউ ৭৭৭২ নম্বৰৰ এখন চুইফট ডিজায়াৰ বাহনো আৰক্ষীয়ে জব্দ কৰে। এই ঘটনাৰ সৈতে জড়িত থকাৰ অভিযোগত ৰৰপেটা জিলাৰ খংৰাৰ আকবৰ আলীৰ পুত্ৰ ৰবিদুল আলীক গ্ৰেপ্তাৰ কৰে। আৰক্ষীয়ে বাহন দুখন জব্দ কৰি তদন্তৰ বাবে নিজৰ জিম্মাত লৈছে। ঘটনা সন্দৰ্ভত মুকালমুৱা আৰক্ষী থানাত এটা গোচৰ ৰুজু কৰা হৈছে।

অৰুণাচল, মিজোৰাম আৰু ছিকিমত ভোটাৰ তালিকা সংশোধনৰ নিৰ্দেশ নিৰ্বাচন আয়োগৰ

জন জন বিচাৰ
...✍ নতুন দিল্লী

আগন্তুক ২০২৭ চনৰ নিৰ্বাচনী প্ৰস্তুতি আৰু ভোটাৰ তালিকাৰ শুদ্ধতা নিশ্চিত কৰাৰ লক্ষ্যৰে দেশৰ নিৰ্বাচন আয়োগে চাৰিখন ৰাজ্য আৰু দুখন কেন্দ্ৰীয় শাসিত অঞ্চলত বাৰ্ষিক বিশেষ সংক্ষিপ্ত সংশোধনী কাৰ্যসূচী ঘোষণা কৰিছে। ৫ নৱেম্বৰত ঘোষণা কৰা এই কাৰ্যসূচীৰ আওতাত উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ তিনিখন ৰাজ্য ক্ৰমে অৰুণাচল প্ৰদেশ, মিজোৰাম আৰু ছিকিমকো অন্তৰ্ভুক্ত কৰা হৈছে। আয়োগৰ নিৰ্ধাৰিত সূচী অনুসৰি ২০২৭ চনৰ ২১ জানুৱাৰীত চূড়ান্ত ভোটাৰ তালিকা প্ৰকাশ কৰা হ'ব।

এই সংশোধনী প্ৰক্ৰিয়াৰ অধীনত অৰুণাচল প্ৰদেশ, মিজোৰাম, ছিকিম, ওড়িশাৰ লগতে চণ্ডীগড় আৰু দাদৰা-নগৰ হাভেলী তথা দমন-দিউত ভোটাৰ তালিকা উন্নীত কৰা হ'ব। বিশেষকৈ নতুনকৈ ভোটদানৰ যোগ্যতা অৰ্জন কৰা যুৱক-যুৱতী আৰু প্ৰথমবাৰৰ বাবে ভোটদান কৰিবলৈ আগ্ৰহী নাগৰিকসকলক তালিকাত অন্তৰ্ভুক্ত কৰাৰ ওপৰত গুৰুত্ব দিয়া হ'ব।

নিৰ্বাচন আয়োগে জনোৱা অনুসৰি, ২০২৭ চনৰ ১ জানুৱাৰীৰ যোগ্যতা নিৰ্ধাৰণৰ তাৰিখৰ উপৰি ১ এপ্ৰিল, ১ জুলাই আৰু ১ অক্টোবৰত ভোটদানৰ যোগ্যতা অৰ্জন কৰিবলগীয়া ব্যক্তিসকলেও আগতীয়াকৈ আবেদন কৰিব পাৰিব।

আয়োগৰ সূচী অনুসৰি অহা ৩০ নৱেম্বৰত ভোটাৰ তালিকাৰ খচৰা প্ৰকাশ কৰা হ'ব। ইয়াৰ পিছত যোগ্য ভোটাৰ আৰু সংশ্লিষ্ট পক্ষসমূহে তালিকাত নাম অন্তৰ্ভুক্তি, সংশোধন অথবা আপত্তি দাখিল কৰিব পাৰিব।

আনহাতে, ভোটাৰ তালিকাৰ পৰা কোনো যোগ্য ব্যক্তিৰ নাম যাতে ভুলবশতঃ কৰ্তন নহয়, তাৰ বাবে বিশেষ সতৰ্কতামূলক ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিছে নিৰ্বাচন আয়োগে। একাধিক বা পুনৰাবৃত্তি হোৱা নাম কৰ্তনৰ বাবে দাখিল কৰা আবেদনসমূহ ক্ষেত্ৰ পৰ্যায়ত পৰীক্ষা কৰাটো বাধ্যতামূলক কৰা হৈছে। কোনো এটা ভোটকেন্দ্ৰৰ মুঠ ভোটাৰৰ দুই শতাংশতকৈ অধিক নাম কৰ্তনৰ প্ৰস্তাৱ আহিলে নিৰ্বাচনী পঞ্জীয়ন বিষয়াই নিজে সেই বিষয়সমূহ পুনৰীক্ষণ কৰিব লাগিব। একেদৰে, কোনো এজন আপত্তিকাৰীয়ে পাঁচটাতকৈ অধিক আপত্তি দাখিল কৰিলেও সংশ্লিষ্ট বিষয়াই নিজে পৰীক্ষা কৰিব লাগিব।

আধাৰ কাৰ্ডৰ তথ্য প্ৰদানৰ ক্ষেত্ৰতো আয়োগে স্পষ্টীকৰণ দিছে। ৬ আৰু ৮ নম্বৰ প্ৰ-পত্ৰত আধাৰ নম্বৰ উল্লেখ কৰাটো সম্পূৰ্ণৰূপে ঐচ্ছিক হৈ থাকিব। আধাৰৰ তথ্য নিদিয়াৰ বাবেই কোনো ব্যক্তিৰ ভোটাৰ হিচাপে নাম পঞ্জীয়নৰ আবেদন নাকচ কৰিব নোৱাৰিব বা পূৰ্বৰ পৰা তালিকাত থকা কোনো ভোটাৰৰ নাম কৰ্তন কৰিব নোৱাৰিব।

উল্লেখযোগ্য যে ইয়াৰ পূৰ্বে ১৫ অক্টোবৰত নিৰ্বাচন আয়োগে উত্তৰ প্ৰদেশ, উত্তৰাখণ্ড, মণিপুৰ, গোৱা আৰু পঞ্জাবকে ধৰি ১৭খন ৰাজ্য আৰু কেন্দ্ৰীয় শাসিত অঞ্চলত একেধৰণৰ বিশেষ সংক্ষিপ্ত সংশোধনী কাৰ্যসূচী ঘোষণা কৰিছিল। আনহাতে, প্ৰথমবাৰৰ বাবে স্বীকৃতিপ্ৰাপ্ত ৰাজনৈতিক দলসমূহক ভোটাৰ তালিকাৰ প্ৰতিলিপি ছবিৰ সলনি সহজে পঢ়িব পৰা পিডিএফ ৰূপত প্ৰদানৰ সিদ্ধান্তও গ্ৰহণ কৰা হৈছে।

সংশ্লিষ্ট ৰাজ্য আৰু কেন্দ্ৰীয় শাসিত অঞ্চলসমূহৰ মুখ্য সচিবসকলক এই কাম সম্পন্ন কৰাৰ বাবে পৰ্যাপ্ত কৰ্মচাৰী আৰু প্ৰয়োজনীয় সা-সুবিধা নিশ্চিত কৰিবলৈ নিৰ্দেশ দিয়া হৈছে। নিৰ্বাচন আয়োগৰ এই পদক্ষেপে ভোটাৰ তালিকাৰ স্বচ্ছতা আৰু শুদ্ধতা বৃদ্ধিৰ লগতে ২০২৭ চনত ভোটদানৰ যোগ্যতা অৰ্জন কৰিবলগীয়া নতুন ভোটাৰসকলক গণতান্ত্ৰিক প্ৰক্ৰিয়াত অন্তৰ্ভুক্ত কৰাৰ ক্ষেত্ৰত বিশেষ ভূমিকা পালন কৰিব বুলি আশা কৰা হৈছে।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

০৬ নৱেম্বৰ ২০২৬ৰ পৰা **১২ নৱেম্বৰ** ২০২৬ লৈ

মেষ : মানসিক উদ্বিগ্নতা বৃদ্ধি। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ। মাতৃৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হব।

বৃষ: দৰকাৰী সিদ্ধান্ত গ্ৰহণৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। প্ৰতিযগিতামূলক কাৰ্য্যত সাফল্য অৰ্জন। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ।

মিথুন: মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। দৰকাৰী সিদ্ধান্ত গ্ৰহণৰ ক্ষেত্ৰত সতৰ্ক হব। বিদ্যাৰ্থীৰ বাৰে সপ্তাহটো শুভ।

কৰ্কট: চেষ্টাৰ ক্ষেত্ৰত বাধাৰ সম্মুখীন হব পাৰে। অদৰ্কাৰী খৰচৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধান হব। সন্তানৰ ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

সিংহ: মানসিক বেমেজালি বৃদ্ধি হব পাৰে। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। আধ্যাত্মিক ক্ষেত্ৰত মনোনিবেশ থাকিব।

কন্যা : আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ। ধৰ্মীয় কাৰ্য্যত মনোনিবেশ থাকিব। চেষ্টাৰ সাফল্য লাভ।

তুলা: কৰ্মক্ষেত্ৰত সতৰ্কতা অৱলম্বন কৰিব। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

বৃশ্চিক: ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ। বৈদেশিক কাৰ্য্যৰ লগত জৰিত কৰ্মৰ ক্ষেত্ৰত সুফল। ভাগ্যৰ সহায় থাকিব।

ধনু : কৰ্মক্ষেত্ৰত সতৰ্কতা অৱলম্বন কৰিব। সামাজিক কাৰ্যত শুনাম অৰ্জন। আকস্মিক কোনো শুভ সংবাদ আহিব পাৰে।

মকৰ: দৈনন্দিন বার্তা বিনিময়ৰ ক্ষেত্ৰত সতৰ্ক হব। দৰকাৰী সিদ্ধান্তগ্ৰহণৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। ব্যাৱসায় বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ।

কুম্ভ : কৰ্মব্যস্ততা বৃদ্ধি হব পাৰে। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। বিদ্যাৰ্থীয়ে সাৱধানতা অবলম্বন কৰিব।

মীন: দৈনন্দিন বার্তা বিনিময়ৰ ক্ষেত্ৰত সাৱধান হব। শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লব। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত সপ্তাহটো শুভ।

- হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

জুবিন গার্গৰ মৃত্যুৰ গোচৰঃ ৩০ নৱেম্বৰত উচ্চতম ন্যায়ালয়ত চাৰিটা জামিন আবেদনৰ শুনানি

জন জন বিচাৰ
...✍ নতুন দিল্লী

অসমবাসীৰ আৱেগ আৰু উৎকণ্ঠাৰ কেন্দ্ৰবিন্দু হৈ থকা জনপ্ৰিয় কণ্ঠশিল্পী জুবিন গার্গৰ ৰহস্যজনক মৃত্যুৰ গোচৰত এক গুৰুত্বপূৰ্ণ আইনী অগ্ৰগতি ঘটিছে। অহা ৩০ নৱেম্বৰত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে এই গোচৰৰ সৈতে জড়িত চাৰিটা জামিন সম্পৰ্কীয় আবেদনৰ শুনানি গ্ৰহণ কৰিব। শুকুৱাবাৰে, ৬ নৱেম্বৰত অনুষ্ঠিত হোৱাৰ কথা থকা শুনানি পিছুৱাই দিয়াৰ পিছতে নতুন তাৰিখ নিৰ্ধাৰণ কৰা হৈছে।

এই শুনানিত শ্যামকানু মহন্ত আৰু সিদ্ধাৰ্থ শর্মাৰ জামিন আবেদনসমূহৰ লগতে গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয়ে অমৃতপ্ৰভা মহন্ত আৰু সন্দীপন গার্গক প্ৰদান কৰা জামিনৰ বিৰুদ্ধে অসম চৰকাৰে দাখিল কৰা প্ৰত্যাহ্বানমূলক আবেদনসমূহো বিচাৰ কৰা হ'ব।

উল্লেখযোগ্য যে গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয়ে ইতিমধ্যে অমৃতপ্ৰভা মহন্ত আৰু অসম আৱক্ষীৰ নিলম্বিত উপ-আৱক্ষী অধীক্ষক সন্দীপন গার্গক জামিন প্ৰদান কৰিছে। কিন্তু এই সিদ্ধান্তত সন্তুষ্ট নোহোৱা অসম চৰকাৰে উচ্চতম ন্যায়ালয়ৰ দ্বাৰস্থ হৈছে। ১৮ অক্টোবৰত অপৰাধ অনুসন্ধান বিভাগৰ বিশেষ সঞ্চালক প্ৰধান তথা বিশেষ তদন্তকাৰী দলৰ (এছআইটি) মুৰব্বী মুন্না প্ৰসাদ গুপ্তাই এই জামিনৰ আদেশৰ বিৰুদ্ধে উচ্চতম ন্যায়ালয়ত আবেদন জনোৱাৰ কথা নিশ্চিত কৰিছিল।

আনহাতে, উত্তৰ-পূব ভাৰত মহোৎসৱৰ আয়োজক শ্যামকানু মহন্ত আৰু সিদ্ধাৰ্থ শর্মাও এই গোচৰৰ অন্যতম অভিযুক্ত। শ্যামকানু মহন্তৰ বিৰুদ্ধে চলা বিচাৰ প্ৰক্ৰিয়া যাতে নিষ্ঠা আৰু ক্ষিপ্ৰতাৰে সম্পন্ন হয়, তাৰ বাবে পূর্বে উচ্চতম ন্যায়ালয়ে অসম চৰকাৰক নির্দেশ দিছিল।

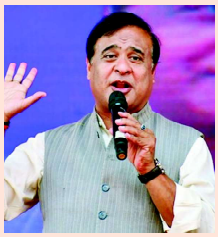
গোচৰটোৰ বিচাৰ এখন দ্ৰুত বিচাৰ আদালতত চলি আছে। এছআইটিৰ মুৰব্বী গুপ্তাই ১৮ অক্টোবৰত প্ৰকাশ কৰা অনুসৰি, সেই সময়লৈকে আদালতত ১৩৪ গৰাকী সাক্ষীৰ সাক্ষ্য গ্ৰহণ কৰা হৈছিল। ফলত গোচৰটোৰ বিচাৰ প্ৰক্ৰিয়াই এক গুৰুত্বপূৰ্ণ পর্যায় অতিক্ৰম কৰিছে।

উল্লেখ্য যে ২০২৫ চনৰ ১৯ ছেপ্টেম্বৰত ছিংগাপুৰত সাগৰত সাঁতুৰি থকাৰ সময়তে জুবিন গার্গৰ মৃত্যু হৈছিল। তেওঁ উত্তৰ-পূব ভাৰত মহোৎসৱত অংশগ্ৰহণ কৰিবলৈ দেশখনলৈ গৈছিল আৰু পিছদিনা মহোৎসৱত সংগীত পৰিৱেশন কৰাৰ কথা আছিল। তেওঁৰ আকস্মিক মৃত্যুৱে সমগ্ৰ অসমতে তীব্ৰ প্ৰতিক্ৰিয়াৰ সৃষ্টি কৰাৰ লগতে মৃত্যুৰ প্ৰকৃত কাৰণ উদঘাটনৰ দাবী উত্থাপন হৈছিল। পৰৱর্তী সময়ত অসম চৰকাৰে ঘটনাৰ তদন্তৰ বাবে বিশেষ তদন্তকাৰী দল গঠন কৰে।

এতিয়া ৩০ নৱেম্বৰৰ উচ্চতম ন্যায়ালয়ৰ শুনানিৰ ওপৰত ৰাজ্যবাসীৰ দৃষ্টি নিবদ্ধ হৈছে।

সাক্ষীসকলক প্ৰশ্ন কৰক সংবাদ মাধ্যমে ঃ হিমন্ত বিশ্ব

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী



জনপ্ৰিয় কণ্ঠশিল্পী জুবিন গার্গৰ মৃত্যুৰ গোচৰক লৈ সংবাদ মাধ্যমৰ একাংশ বাতৰিৰ প্ৰতি প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে অসমৰ মুখ্যমন্ত্ৰী হিমন্ত বিশ্ব শর্মাই। বিশেষকৈ অভিযুক্তসকলৰ জামিন লাভৰ সম্ভাৱনা আৰু টেলিভিছনৰ সাক্ষাৎকাৰত সাক্ষীসকলে দিয়া বক্তব্যৰ সৈতে আদালতত লিপিবদ্ধ কৰা সাক্ষ্যৰ পার্থক্যক লৈ তেওঁ সংবাদ মাধ্যমৰ ভূমিকা সন্দর্ভত প্ৰতিক্ৰিয়া প্ৰকাশ কৰে।

মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে প্ৰশ্ন কৰে যে উচ্চতম ন্যায়ালয়ে জামিন আবেদনৰ সন্দর্ভত কোনো সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰাৰ পূর্বেই অভিযুক্তসকলে জামিন লাভ কৰিব বুলি সংবাদ মাধ্যমৰ একাংশই কিয় বাতৰি প্ৰকাশ কৰিছে। তেওঁৰ মতে, গোচৰটোৰ ন্যায়িক প্ৰক্ৰিয়া আৰু প্ৰমাণসমূহৰ যথাযথ মূল্যায়ন নকৰাকৈ এনে ধৰণৰ বাতৰি প্ৰকাশ কৰাটো উচিত নহয়।

গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয়ে অমৃতপ্ৰভা মহন্তক প্ৰদান কৰা জামিনৰ প্ৰসংগও মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে উল্লেখ কৰে। ন্যায়াধীশ প্ৰাঞ্জল দাসৰ বিচাৰপীঠে প্ৰদান কৰা এই জামিনৰ আদেশ আৰু সাক্ষীসকলৰ বক্তব্যৰ ব্যাখ্যাক লৈ তেওঁ অধিক গভীৰভাৱে পর্যালোচনা কৰাৰ প্ৰয়োজনীয়তা প্ৰকাশ কৰে।

মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে বিশেষকৈ আঙুলিয়াই দিয়ে যে একাংশ সাক্ষীয়ে সংবাদ মাধ্যমৰ সাক্ষাৎকাৰত যি বক্তব্য দিছে, আদালতত সাক্ষ্য প্ৰদানৰ সময়ত তেওঁলোকৰ বক্তব্য তাৰ পৰা পৃথক হোৱা বুলি চর্চা হৈছে। সেয়েহে সংবাদ মাধ্যমত প্ৰকাশিত বক্তব্য আৰু আদালতত শপত গ্ৰহণ কৰি দিয়া সাক্ষ্যক একাকাৰ কৰি চোৱা উচিত নহয় বুলি তেওঁ মন্তব্য কৰে।

গোচৰটোত এতিয়াও বহু সাক্ষীৰ সাক্ষ্য গ্ৰহণ কৰিবলৈ বাকী আছে বুলি উল্লেখ কৰি মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে কয় যে সাক্ষীসকলক কোনো ধৰণৰ হেঁচা প্ৰয়োগ নকৰাকৈ নিজৰ বক্তব্য দাঙি ধৰাৰ সুযোগ দিব লাগিব। ৰাজ্য চৰকাৰে কোনো সাক্ষীৰ ওপৰত হেঁচা প্ৰয়োগ কৰিব নোৱাৰে বুলিও তেওঁ স্পষ্ট কৰে। লগতে অসমৰ জনসাধাৰণৰ আৱেগ, অনুভূতি আৰু মূল্যবোধৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখি সংবাদ মাধ্যমক দায়িত্বশীলভাৱে বাতৰি পৰিবেশন কৰিবলৈ আহ্বান জনায়।

জুবিন গার্গৰ এটা প্ৰতিবাদী কার্যসূচীত ভূমিকা সন্দর্ভত এগৰাকী সাক্ষীয়ে কৰা মন্তব্যৰ বিষয়টোও মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে উত্থাপন কৰে। সংবাদ মাধ্যমত এনে বক্তব্য কেনেদৰে উপস্থাপন আৰু ব্যাখ্যা কৰা হৈছে, তাক লৈও তেওঁ প্ৰশ্ন কৰে।

ইফালে, জুবিন গার্গৰ মৃত্যুৰ গোচৰৰ সৈতে জড়িত আটাইকেইটা জামিন সম্পৰ্কীয় আবেদনৰ শুনানি উচ্চতম ন্যায়ালয়ে অহা ৩০ নৱেম্বৰলৈ পিছুৱাই দিছে। শ্যামকানু মহন্ত আৰু সিদ্ধাৰ্থ শর্মাৰ জামিন আবেদনৰ লগতে গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয়ে অমৃতপ্ৰভা মহন্ত আৰু সন্দীপন গার্গক প্ৰদান কৰা জামিনৰ বিৰুদ্ধে অসম চৰকাৰে দাখিল কৰা আবেদনসমূহো সেইদিনা শুনানিৰ বাবে গ্ৰহণ কৰা হ'ব।

বর্তমান গোচৰটোৰ বিচাৰ দ্ৰুত বিচাৰ আদালতত চলি আছে। সাক্ষীসকলৰ সাক্ষ্য গ্ৰহণেই এতিয়া গোচৰটোৰ বিচাৰ প্ৰক্ৰিয়াৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ দিশ হৈ পৰিছে। এনে পৰিস্থিতিত সংবাদ মাধ্যমৰ ভূমিকা, সাক্ষীৰ নিৰপেক্ষতা আৰু ন্যায়িক প্ৰক্ৰিয়াৰ স্বচ্ছতাক লৈ মুখ্যমন্ত্ৰীৰ এই মন্তব্যই ৰাজ্যজুৰি নতুন চর্চাৰ সৃষ্টি কৰিছে।

ন-পাৰা পামৰ দেওবৰীয়া বজাৰত ভয়ংকৰ অগ্নিকাণ্ড



জন জন বিচাৰ
...✍ আমজাদ হুছেইন, ৰৱক্ষেত্ৰী

নলবাৰী জিলাৰ ৰৱক্ষেত্ৰী সমষ্টিৰ ন-পাৰা পামস্থিত দেওবৰীয়া বজাৰত সংঘটিত এক বিধ্বংসী অগ্নিকাণ্ডই সৃষ্টি কৰে হাহাকাৰময় পৰিস্থিতিৰ। ভয়ংকৰ জুইত সম্পূর্ণৰূপে ভস্মীভূত হয় পাঁচখনকৈ ব্যৱসায়িক প্ৰতিষ্ঠান। অগ্নিকাণ্ডটোত প্ৰায় ১৫ লক্ষাধিক টকাৰ সা-সম্পত্তি জুইত জাহ যোৱা বুলি জানিব পৰা গৈছে। প্ৰাপ্ত তথ্য অনুসৰি, আয়ান আলী নামৰ এজন ব্যৱসায়ীৰ কাপোৰৰ দোকানৰ পৰা জুইৰ সূত্ৰপাত ঘটে। মুহূর্তৰ ভিতৰতে জুইৰ লেলিহান শিখাই কাষৰীয়া দোকানসমূহলৈ বিয়পি পৰে। ফলত ফজৰ আলী, মুঞ্জৰ আলী, আয়ান আলী, কাছেম আলী আৰু ৰফিক আলী নামৰ পাঁচজন ব্যৱসায়ীৰ দোকান সম্পূর্ণৰূপে ভস্মীভূত হয়। অগ্নিকাণ্ডৰ ফলত ব্যৱসায়ীসকলৰ বিস্তৰ ক্ষতিসাধন হয়। ইফালে, অগ্নিকাণ্ডৰ প্ৰকৃত কাৰণ এতিয়ালৈকে জানিব পৰা হোৱা নাই। অৱশ্যে বিদ্যুতৰ শর্ট চার্কিটৰ ফলতে জুইৰ সূত্ৰপাত ঘটা বুলি সন্দেহ প্ৰকাশ কৰিছে স্থানীয় ৰাইজে। স্থানীয় লোকৰ অভিযোগ অনুসৰি, যাতায়াতৰ অচল অৱস্থাৰ বাবে ঘটনাস্থলীত অগ্নিনির্বাপক বাহিনী সময়মতে উপস্থিত হ'ব নোৱাৰিলে। এনে পৰিস্থিতিত স্থানীয় ৰাইজে তাৎক্ষণিকভাৱে উদ্ধাৰকার্যত নামি জুই নির্বাপনৰ চেষ্টা চলায়। এই অগ্নিকাণ্ডৰ ফলত উপার্জনৰ পথ হেৰুৱাই দিশহাৰা হৈ পৰিছে ক্ষতিগ্ৰস্ত ব্যৱসায়ী পৰিয়ালকেইটা। দুর্দশাগ্ৰস্ত পৰিয়ালকেইটাক উপযুক্ত ক্ষতিপূৰণ প্ৰদানৰ বাবে চৰকাৰ আৰু নলবাৰী জিলা আয়ুক্তৰ ওচৰত দাবী জনাইছে স্থানীয় ৰাইজ তথা বিভিন্ন দল-সংগঠনে। অগ্নিকাণ্ডৰ ঘটনাই সমগ্ৰ অঞ্চলটোত শোক আৰু উদ্বেগৰ সৃষ্টি কৰিছে।

সম্পাদকীয়

মধ্যৱর্তী নির্বাচনৰ ফলাফলত স্পষ্ট জনমত

আন দেশত শাসন পৰিৱর্তনৰ সপোন দেখা ড'নাল্ড ট্রাম্পে এইবাৰ নিজৰ দেশতে ৰাজনৈতিক প্রত্যাহ্বানৰ সম্মুখীন হৈছে। আমেৰিকাৰ মধ্যৱর্তী নির্বাচনত ডেম'ক্রেটিক দলৰ শক্তিশালী উত্থানে ৰিপাব্লিকান শিবিৰক বিপর্যস্ত কৰিছে। দুয়োটা সদনত সংখ্যাগৰিষ্ঠতা হেৰুওৱাৰ এই ফলাফল কেৱল দলীয় পৰাজয় নহয়; ই ট্রাম্প প্রশাসনৰ নীতি আৰু নেতৃত্বৰ প্রতি ভোটাৰৰ অসন্তুষ্টিৰো এক স্পষ্ট ৰাজনৈতিক বার্তা।

নির্বাচনৰ পূর্বে ট্রাম্পে নিজৰ জনপ্রিয়তাক দলীয় প্রার্থীৰ জয়ৰ নিদ্রশ্চয়তা বুলি গণ্য কৰিছিল। আনকি ভোটাৰক এনে ধৰণে ভোট দিবলৈ আহ্বান জনাইছিল, যেন নির্বাচনত তেওঁ নিজেই প্রতিদ্বন্দ্বিতা কৰিছে। কিন্তু যুদ্ধৰ চাপ, শুল্কনীতি, মূল্যবৃদ্ধি আৰু বিতর্কিত সিদ্ধান্তই সেই আত্মবিশ্বাসত আঘাত হানিলে। নিজৰ শক্তিশালী ঘাটিতো ৰিপাব্লিকান প্রার্থীৰ পৰাজয়ে প্রমাণ কৰিলে যে কেৱল ব্যক্তিগত প্রভাৰ আৰু ৰাজনৈতিক প্রচাৰে জনতাৰ আস্থা ধৰি ৰাখিব নোৱাৰে।

ইয়াৰ তাৎপর্য এইটো নহয় যে ট্রাম্পে তৎক্ষণাৎ ক্ষমতা এৰিব লাগিব। কিন্তু কংগ্রেছৰ দুয়োটা সদনত বিৰোধীৰ নিয়ন্ত্রণ থাকিলে তেওঁৰ নীতি ৰদ্রূপায়ণ কঠিন হ'ব। শুল্কনীতি, স্বাস্থ্যসেৱা আৰু ইৰান যুদ্ধৰ দৰে বিষয়ত ডেম'ক্রেটসকলে প্রশাসনক অধিক চাপত ৰাখিব পাৰিব। ফলত ট্রাম্পৰ কার্যকালৰ বাকী সময়ছোৱা ৰাজনৈতিক সংঘাত আৰু নীতিগত বাধাৰ মাজেৰে আগবঢ়াৰ সম্ভাৱনা আছে।

ভাৰতৰ বাবেও এই পৰিৱর্তন গুৰুত্বপূর্ণ। বিশ্ববজাৰত খাৰুৱা তেলৰ মূল্য হ্রাস পালে ভাৰতৰ আমদানি ব্যয় আৰু মুদ্রাস্ফীতিৰ চাপ কমিব পাৰে। অৱশ্যে আমেৰিকাৰ ৰাজনৈতিক অস্থিৰতাই বিশ্ব অর্থনীতি আৰু বাণিজ্যত নতুন অনিশ্চয়তাও সৃষ্টি কৰিব পাৰে।

ট্রাম্পৰ এই পৰাজয়ে বিশ্বৰ ৰাজনীতিক এটা স্পষ্ট শিক্ষা দিছে-ক্ষমতাৰ অহংকাৰ, যুদ্ধৰ উত্তেজনা আৰু অর্থনৈতিক চাপৰ ওপৰত নির্ভৰ কৰি জনসমর্থন দীর্ঘদিন ধৰি ৰাখিব নোৱাৰি। বিদেশত শাসন সলনিৰ অভিযান চলোৱাৰ আগতে নিজৰ দেশৰ জনতাৰ আস্থা অটুট ৰখাটোৱেই এজন নেতাৰ প্রকৃত পৰীক্ষা।

ইউজিচি ঃ মোদী চৰকাৰৰ দোদুল্যমান স্থিতি

জন জন বিচাৰ

...✍ নীৰজ কুমাৰ ডুবে

ইউজিচিৰ নতুন নিয়মক কেন্দ্র কৰি আৰম্ভ হোৱা বিতর্কই এতিয়া শিক্ষানুষ্ঠানৰ চৌহদ অতিক্রম কৰি পোনপটীয়াকৈ ৰাজনৈতিক পথাৰত প্রৱেশ কৰিছে। বিষয়টো এতিয়া কেৱল জাতিগত বৈষম্য বোধৰ ব্যৱস্থাৰ মাজতে সীমাবদ্ধ হৈ থকা নাই, বৰং উচ্চবর্ণৰ অসন্তুষ্টি, ৰাজনৈতিক দলসমূহৰ জাতিগত সমীকৰণ আৰু ভোটবেংকৰ যুঁজৰ বিষয়লৈও পৰিণত হৈছে। বিশেষকৈ পাঁচখন ৰাজ্যৰ আগন্তুক বিধানসভা নির্বাচনৰ পূর্বে এই বিতর্কই ৰাজনৈতিক দলসমূহৰ উদ্বেগ বৃদ্ধি কৰিছে।

এই নিয়মসমূহৰ বিৰুদ্ধে ইয়াৰ পূর্বেও দেশৰ বিভিন্ন প্রান্তত উচ্চবর্ণৰ লোকসকলে ব্যাপক প্রতিবাদ সাব্যস্ত কৰিছিল। বিষয়টো উচ্চতম ন্যায়ালয়লৈ যোৱাৰ পিছত আদালতে নিয়মসমূহৰ কার্যকৰীকৰণত স্থগিতাদেশ জাৰি কৰিছিল। এতিয়া পুনৰ নিয়মসমূহৰ পর্যালোচনা আৰু ইয়াক লৈ চলি থকা ৰাজনৈতিক বিতর্কই নির্বাচনী পৰিৱেশত নতুন প্রশ্নৰ অৱতাৰণা কৰিছে।

আটাইতকৈ ডাঙৰ প্রশ্নটো হ'ল-ইউজিচি বিতর্কৰ জৰিয়তে উচ্চবর্ণৰ লোকসকলৰ অসন্তুষ্টি নির্বাচনী ইস্যু হৈ পৰিব নেকি? ইয়াৰ প্রভাৰ পৰিব নেকি সেই ৰাজ্যসমূহৰ জাতিগত ৰাজনৈতিক সমীকৰণত, য'ত বিজেপিৰ ৰাজনীতি বহু পৰিমাণে পৰম্পৰাগত সামাজিক সমর্থনৰ ওপৰত নির্ভৰশীল?

ইউজিচি বিতর্কই ল'লে নতুন মোৰ, কেন্দ্রৰ শেহতীয়া স্থিতি

উল্লেখযোগ্য যে এই বিতর্কৰ মাজতে আটাইতকৈ গুৰুত্বপূর্ণ ৰাজনৈতিক পৰিঘটনাটো হৈছে-কেন্দ্রীয় চৰকাৰে উচ্চতম ন্যায়ালয়ক জনাইছে যে ২০২৬ চনৰ ইউজিচিৰ সমতা বিধি পুনৰীক্ষণৰ বাবে এখন সমিতি গঠনৰ কথা বিবেচনা কৰি আছে। অর্থাৎ চৰকাৰে নিয়মসমূহ সম্পূর্ণৰূপে প্রত্যাহাৰ কৰাৰ সিদ্ধান্তও লোৱা নাই, আনহাতে পূর্বৰ ৰূপতে কার্যকৰী কৰাৰ সিদ্ধান্তও গ্রহণ কৰা নাই।

উচ্চতম ন্যায়ালয়েও চৰকাৰক নিয়মসমূহ পুনৰ বিবেচনা কৰিবলৈ পৰামর্শ দিছে, যাতে কোনো শিক্ষার্থীৰ সৈতে বৈষম্য নহয় আৰু সকলোৰে স্বার্থ সুৰক্ষিত থাকে।

স্মৰণ কৰিব পাৰি যে ২০২৬ চনৰ ১৩ জানুৱাৰীত অধিসূচনা জাৰি কৰা এই নিয়মসমূহৰ মূল উদ্দেশ্য আছিল উচ্চ শিক্ষানুষ্ঠানসমূহত জাতিগত বৈষম্য বোধ কৰা। ইয়াৰ অধীনত বিশ্ববিদ্যালয় আৰু মহাবিদ্যালয়সমূহত সমতা সমিতি আৰু সমান সুযোগ কেন্দ্র স্থাপনৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছিল।

কিন্তু নিয়মসমূহত জাতিগত বৈষম্যৰ সংজ্ঞাক লৈ বিতর্কৰ সৃষ্টি হয়। অনুসূচিত জাতি, অনুসূচিত জনজাতি আৰু অন্যান্য পিছপৰা শ্রেণীৰ বিৰুদ্ধে জাতিভিত্তিক বৈষম্যক যিদৰে সংজ্ঞায়িত কৰা হৈছে, তাক সাধাৰণ শ্রেণীৰ শিক্ষার্থীসকলৰ বাবে বৈষম্যমূলক ব্যৱস্থা বুলি অভিহিত কৰা হয়।

উচ্চবর্ণৰ সংগঠন আৰু সাধাৰণ শ্রেণীৰ শিক্ষার্থীসকলে আশংকা প্রকাশ কৰে যে এই ব্যৱস্থাৰ অপব্যৱহাৰ কৰি তেওঁলোকৰ বিৰুদ্ধে মিছা অভিযোগ উত্থাপন আৰু হাৰাশাস্তি কৰাৰ পথ মুকলি হ'ব পাৰে। লাহে লাহে এই প্রতিবাদ দেশৰ কেইবাখনো ৰাজ্যলৈ বিয়পি পৰে। উত্তৰ প্রদেশত এই প্রতিবাদে বিজেপিৰ ভিতৰতো অস্বস্তিৰ সৃষ্টি কৰে। দলৰ কেইবাজনো বিষয়াই আনকি পদত্যাগো কৰে।

অৱশেষত ২০২৬ চনৰ ২৯ জানুৱাৰীত উচ্চতম ন্যায়ালয়ে এই নিয়মসমূহৰ কার্যকৰীকৰণত স্থগিতাদেশ জাৰি কৰে আৰু ২০১২ চনৰ পুৰণি নিয়মসমূহ বাহাল ৰখাৰ নির্দেশ দিয়ে। আদালতে নিয়মসমূহৰ অস্পষ্টতা আৰু ইয়াৰ সম্ভাব্য অপব্যৱহাৰক লৈ গুৰুত্বপূর্ণ প্রশ্ন উত্থাপন কৰিছিল।

এতিয়া মোদী চৰকাৰে পুনৰীক্ষণ সমিতি গঠনৰ কথা বিবেচনা কৰাৰ খবৰ প্রকাশ পোৱাৰ লগে লগে সমগ্র বিতর্কই পুনৰ ৰাজনৈতিক ৰূপ ধাৰণ কৰিছে।

পাঁচখন ৰাজ্যৰ নির্বাচনত বিজেপিৰ সম্মুখত জাতিগত সমীকৰণৰ প্রত্যাহ্বান

এই বিতর্কৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ ৰাজনৈতিক প্রভাৰ ২০২৭ চনৰ বিধানসভা নির্বাচনত পৰাৰ সম্ভাৱনা আছে। উত্তৰ প্রদেশ, পঞ্জাব, উত্তৰাখণ্ড, গোৱা আৰু মণিপুৰত বিধানসভা নির্বাচন অনুষ্ঠিত হ'ব। ইয়াৰ ভিতৰত উত্তৰ প্রদেশ আৰু উত্তৰাখণ্ডত পুনৰ ক্ষমতা দখল কৰাটো বিজেপিৰ বাবে সম্মানৰ বিষয়। আনহাতে, পঞ্জাবত নিজৰ ৰাজনৈতিক ভেটি শক্তিশালী কৰাৰ চেষ্টা চলাইছে দলটোৱে। এনে পৰিস্থিতিত ইউজিচিৰ বিষয়টোৱে পাঁচোখন ৰাজ্যতে পৃথক পৃথক ৰাজনৈতিক সমীকৰণক প্রভাৱিত কৰিব পাৰে।

উত্তৰ প্রদেশত বিজেপিৰ বাবে আটাইতকৈ ডাঙৰ পৰীক্ষা হ'ব। ইয়াত ব্রাহ্মণ, ঠাকুৰ আৰু বৈশ্য ভোটাৰসকল দীর্ঘদিন ধৰি বিজেপিৰ শক্তিশালী সমর্থক গোটৰ অংশ হৈ আহিছে। ৰাম মন্দিৰ আন্দোলনৰ পৰা আৰম্ভ কৰি হিন্দুত্বৰ বিষয়লৈকে বিজেপিয়ে ব্রাহ্মণ, ঠাকুৰ আৰু অন্যান্য উচ্চবর্ণৰ লোকসকলৰ মাজত নিজৰ শক্তিশালী জনভিত্তি গঢ়ি তুলিছে।

কিন্তু ইউজিচিৰ নতুন নিয়মৰ বিৰুদ্ধে উচ্চবর্ণৰ মাজত যি অসন্তুষ্টি প্রকাশ পাইছে, তাৰ ফলত বিজেপিৰ পৰম্পৰাগত ভোটবেংকত অসন্তুষ্টি বৃদ্ধি পোৱাৰ আশংকা দেখা দিছে। দলটোৰ সৈতে এই শ্রেণীৰ ভোটাৰসকলৰ দীর্ঘদিনীয়া ৰাজনৈতিক সম্পর্ক দুর্বল হোৱাৰো সম্ভাৱনা আছে।

বিজেপিৰ বাবে সমস্যাটো হ'ল, এফালে সাধাৰণ শ্রেণীৰ অসন্তুষ্টি আৰু আনফালে অন্যান্য পিছপৰা শ্রেণী তথা দলিত ভোটাৰৰ বৃহৎ ৰাজনৈতিক আধাৰ। যিকোনো এটা পক্ষক অসন্তুষ্ট কৰাৰ অর্থ হ'ল আনটো পক্ষৰ মাজতো ভুল বার্তা যোৱাৰ আশংকা।

উত্তৰ প্রদেশ বিজেপিৰ সাংগঠনিক পর্যায়তো এই অসন্তুষ্টিৰ ইংগিত দেখা গৈছে। শেহতীয়া বিধান পৰিষদৰ নির্বাচনত বাৰাণসী আৰু লকযেৌৰ দৰে আসনত বিজেপিৰ পৰাজয়কো উচ্চবর্ণৰ অসন্তুষ্টিৰ সৈতে সম্পর্কিত কৰি চোৱা হৈছে। সেয়েহে বিজেপিৰ বাবে এই বিষয়টো কেৱল এটা শৈক্ষিক নিয়মৰ বিতর্ক হৈ থকা নাই, বৰং পৰম্পৰাগত ভোটবেংক সুৰক্ষিত ৰখাৰ যুঁজলৈ পৰিণত হৈছে।

উত্তৰাখণ্ডতো এই বিষয়টোৰ গুৰুত্ব কম নহয়। ৰাজ্যখনত উচ্চবর্ণৰ ভোটাৰৰ ৰাজনৈতিক প্রভাৰ যথেষ্ট আৰু বিজেপিৰ পৰম্পৰাগত সমর্থনৰ ভেটিও এই সামাজিক সমীকৰণৰ সৈতে জড়িত। ইউজিচি বিতর্কক লৈ অসন্তুষ্টি যদি নির্বাচনী ইস্যু হৈ পৰে, তেন্তে কংগ্রেছে বিজেপিৰ বিৰুদ্ধে উচ্চবর্ণৰ অসন্তুষ্টিক ৰাজনৈতিকভাৱে ব্যৱহাৰ কৰাৰ সুযোগ লাভ কৰিব পাৰে।

অৱশ্যে পঞ্জাবৰ ৰাজনৈতিক সমীকৰণ কিছু পৃথক। দেশৰ ভিতৰতে পঞ্জাবত দলিত জনসংখ্যাৰ অনুপাত সর্বাধিক। ইয়াৰ লগতে অন্যান্য পিছপৰা শ্রেণী আৰু সাধাৰণ শ্রেণীৰ ভোটাৰসকললৈও যথেষ্ট প্রভাৰ আছে। বিজেপিৰ বাবে প্রত্যাহ্বান হ'ব উচ্চবর্ণৰ অসন্তুষ্টি দূৰ কৰাৰ লগতে দলিত আৰু পিছপৰা শ্রেণীৰ মাজতো নিজৰ গ্রহণযোগ্যতা অক্ষুণ্ণ ৰখা। কাৰণ ইউজিচি বিতর্কক বিৰোধী পক্ষই সামাজিক ন্যায় আৰু সাধাৰণ শ্রেণীৰ অধিকাৰৰ মাজৰ সংঘাত হিচাপে উপস্থাপন কৰিব পাৰে।

গোৱা আৰু মণিপুৰত এই বিষয়টোৰ প্রভাৰ উত্তৰ প্রদেশৰ দৰে ব্যাপক নহ'বও পাৰে। কিন্তু উচ্চ শিক্ষিত যুৱক-যুৱতী, শিক্ষার্থী আৰু সাধাৰণ শ্রেণীৰ সংগঠিত গোটসমূহৰ মাজত ইয়াৰ ৰাজনৈতিক প্রতিক্রিয়া দেখা পোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে। সামাজিক মাধ্যম আৰু ছাত্র সংগঠনসমূহৰ জৰিয়তে বিষয়টো স্থানীয় নির্বাচনী আলোচনাৰ অংশ হৈ পৰিব পাৰে।

বিজেপিৰ বাবে দুমুখীয়া ৰাজনৈতিক প্রত্যাহ্বান

এই বিতর্কৰ আটাইতকৈ লক্ষণীয় দিশটো হ'ল, বিজেপিৰ সম্মুখত এতিয়া দুমুখীয়া প্রত্যাহ্বান। চৰকাৰে যদি নিয়মসমূহ সম্পূর্ণৰূপে প্রত্যাহাৰ কৰে বা ইয়াত বৃহৎ পৰিৱর্তন আনে, তেন্তে সামাজিক ন্যায়ৰ বিষয়টোক লৈ বিৰোধী পক্ষই চৰকাৰক আক্রমণ কৰাৰ সুযোগ লাভ কৰিব। আনহাতে, নিয়মসমূহ পূর্বৰ ৰূপত কার্যকৰী কৰাৰ চেষ্টা কৰিলে উচ্চবর্ণৰ লোকসকলৰ অসন্তুষ্টি পুনৰ বৃদ্ধি পাব পাৰে।

বিহাৰৰ শিক্ষা বিভাগত ১.৮৫ কোটি টকাৰ অনিয়মৰ অভিযোগ

জন জন বিচাৰ
...প্ৰবৰুণ কুমাৰ, পাটনা

বিহাৰৰ শিক্ষা বিভাগত চৰকাৰী ধনৰ ব্যৱহাৰ আৰু অনলাইন দৰমহা প্ৰদান ব্যৱস্থাৰ স্বচ্ছতাক লৈ এক বৃহৎ বিত্তীয় অনিয়মৰ অভিযোগ পোহৰলৈ আহিছে। বিভাগটোৰ মানৱ সম্পদ ব্যৱস্থাপনা প্ৰণালী (HRMS)ৰ আভ্যন্তৰীণ নিৰীক্ষণত নৱাদা, পাটনা আৰু ভাগলপুৰ জিলাত প্ৰায় ১.৮৫ কোটি টকাৰ বিত্তীয় অনিয়ম ধৰা পৰিছে। চৰকাৰী পৰ্টেলত অননুমোদিত প্ৰৱেশ, দৰমহাৰ নথি সলনি, অবৈধভাৱে ভাট্টা বৃদ্ধি আৰু অস্তিত্বহীন শিক্ষকৰ নামত বেংক একাউণ্টলৈ ধন হস্তান্তৰৰ দৰে গুৰুতৰ অভিযোগ উত্থাপন হৈছে। এই ঘটনাৰ সৈতে জড়িত থকাৰ অভিযোগত ইতিমধ্যে কমেও চাৰিজন বিষয়াক নিলম্বন কৰা হৈছে।

বিভাগীয় অভিযোগ আৰু প্ৰকাশিত প্ৰতিবেদন অনুসৰি, এই অনিয়মৰ ঘটনাসমূহক কেন্দ্ৰ কৰি আৰক্ষীৰ তদন্ত লগতে বিভাগীয় ব্যৱস্থাও আৰম্ভ হৈছে। শিক্ষা মন্ত্ৰী মিথিলেশ তিৱাৰীয়ে জনোৱা মতে, ৰাজ্যখনৰ আটাইকেইখন ৩৮খন জিলাতে এইচআৰএমএছ ব্যৱস্থাৰ আভ্যন্তৰীণ নিৰীক্ষণ চলি আছে। নৱেম্বৰৰ মাজভাগৰ ভিতৰত এই নিৰীক্ষণ সম্পূৰ্ণ কৰিবলৈ বিষয়াসকলক নিৰ্দেশ দিয়া হৈছে।

মন্ত্ৰীগৰাকীয়ে লগতে কয় যে পৰ্টেলৰ তথ্য বিকৃত কৰা ৰোধ কৰিবলৈ কাৰিকৰী বিশেষজ্ঞৰ সহায় লোৱা হৈছে। অনলাইনযোগে ধন পৰিশোধৰ ব্যৱস্থাটো অধিক সুৰক্ষিত কৰাৰ প্ৰয়োজনীয়তাও এই ঘটনাসমূহে স্পষ্ট কৰিছে। দুৰ্নীতিত জড়িত শিক্ষক আৰু বিষয়াসকলৰ বিৰুদ্ধে চৰকাৰৰ অভিযান অব্যাহত থাকিব বুলিও তেওঁ সকীয়াই দিয়ে।

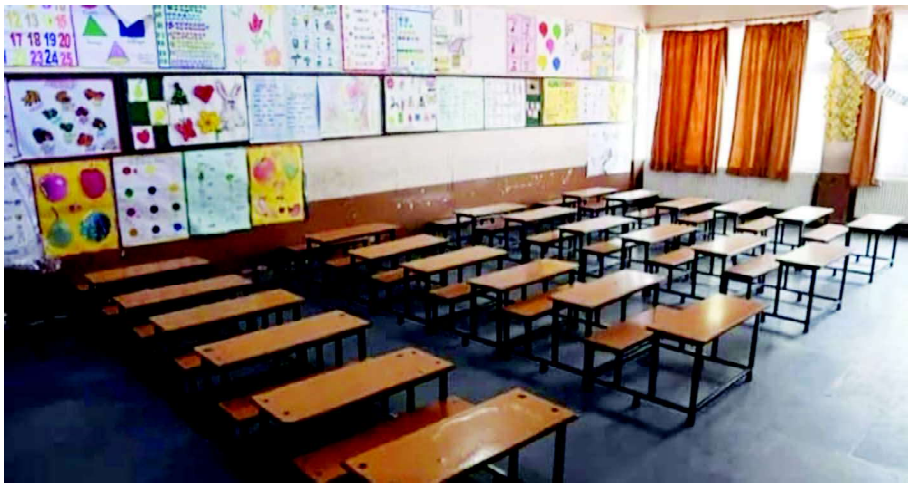


নৱাদাঃ এগৰাকী শিক্ষয়িত্ৰীৰ একাউণ্টত ১০.৪৩ লাখ টকাৰ অতিৰিক্ত ধন

নৱাদা জিলাত প্ৰাথমিক বিদ্যালয়ৰ এগৰাকী শিক্ষয়িত্ৰীৰ দৰমহাৰ তথ্যত হেৰফেৰ কৰি বৃহৎ পৰিমাণৰ ধন আদায় দিয়াৰ অভিযোগ উত্থাপন হৈছে। এই সন্দৰ্ভত ২০২৬ চনৰ ১৩ অক্টোবৰত নৱাদা টাউন আৰক্ষী থানাত ভাৰতীয় ন্যায় সংহিতাৰ বিভিন্ন ধাৰা আৰু দুৰ্নীতি প্ৰতিৰোধ আইনৰ অধীনত গোচৰ ৰুজু কৰা হয়।

জিলা শিক্ষা বিষয়াই দাখিল কৰা অভিযোগত ৰাজৌলিৰ বেলাডিহত কৰ্মৰত এগৰাকী প্ৰাথমিক শিক্ষয়িত্ৰীৰ লগতে এইচআৰএমএছ পৰ্টেলৰ মেকাৰ হিচাপে দায়িত্বত থকা এগৰাকী কেৰাণী আৰু চেকাৰ হিচাপে থকা এগৰাকী মুখ্য কেৰাণীৰ নাম উল্লেখ কৰা হৈছে।

এজাহাৰ অনুসৰি, ২০২৫ চনৰ এপ্ৰিল মাহত শিক্ষয়িত্ৰীগৰাকীৰ অনুমোদিত মুঠ মাহিলি দৰমহা আছিল ৪৬,৭৭২ টকা। কিন্তু পৰ্টেলৰ তথ্যত হেৰফেৰ কৰি অন্যান্য ভাট্টা শিতানত ৪,৫২,২২২ টকা অবৈধভাৱে সংযোজন কৰাৰ ফলত তেওঁৰ একাউণ্টলৈ ৪,৯১,৭৭২ টকা প্ৰেৰণ কৰা হৈছিল বুলি অভিযোগ কৰা হৈছে।



একেধৰণৰ অনিয়ম ২০২৫ চনৰ মে মাহতো সংঘটিত হোৱাৰ অভিযোগ উঠিছে। সেই মাহতো অনুমোদিত দৰমহা ৪৬,৭৭২ টকা হোৱাৰ বিপৰীতে অতিৰিক্ত ভাট্টা সংযোজন কৰি ৩,৪৯,৫০০ টকা আদায় দিয়া হৈছিল বুলি এজাহাৰত উল্লেখ কৰা হৈছে।

ইয়াৰ উপৰি সমগ্ৰ শিক্ষা অভিযানৰ পুঁজিৰ পৰা এছ বি আইৰ জৰিয়তে শিক্ষয়িত্ৰীগৰাকীৰ একাউণ্টলৈ ২.৮৬ লাখ টকা প্ৰেৰণ কৰাৰ তথ্যও তদন্তত পোহৰলৈ আহিছে। তদন্তকাৰীৰ মতে, এই ধন তেওঁৰ অনুমোদিত দৰমহাৰ অংশ নাছিল আৰু চৰকাৰী পুঁজিৰ অপব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। অভিযোগ অনুসৰি, শিক্ষয়িত্ৰীগৰাকীয়ে লাভ কৰা মুঠ অননুমোদিত ধনৰ পৰিমাণ ১০,৪৩,৯৫০ টকা।

আনহাতে, ২০২৫ চনৰ ২০ মেত শিক্ষয়িত্ৰীগৰাকীৰ এছ বি আইৰ একাউণ্টৰ পৰা সতীশ কুমাৰ নামৰ এজন ব্যক্তিৰ পঞ্জাব নেচনেল বেংকৰ একাউণ্টলৈ এক লাখ টকা হস্তান্তৰ কৰাৰ তথ্যও তদন্তকাৰীয়ে পৰীক্ষা কৰিছে। আৰক্ষীৰ সন্দেহ, এই সতীশ কুমাৰেই কাৰ্যালয়ৰ মুখ্য কেৰাণী তথা পৰ্টেলৰ চেকাৰ হিচাপে কৰ্মৰত ব্যক্তি হব পাৰে। অৱশ্যে দুয়োৱে পৰিচয় আৰু সম্পৰ্ক এতিয়াও স্বতন্ত্ৰভাৱে নিশ্চিত হোৱা নাই।

৭৬.৭১ লাখ টকাৰ অনিয়মৰ অভিযোগত কেৰাণী নিলম্বিত

পাটনাতো এক পৃথক ঘটনাত চৰকাৰী ব্যৱহাৰ কৰি এইচআৰএমএছ পৰ্টেলত অননুমোদিত তথ্য অন্তৰ্ভুক্ত কৰিছিল আৰু তাৰ জৰিয়তে অতিৰিক্ত ধনৰ পৰিশোধৰ ব্যৱস্থা কৰিছিল। তেওঁৰ বিৰুদ্ধে প্ৰৱঞ্চনা, অপৰাধমূলক ষড়যন্ত্ৰ আৰু বিশ্বাসভংগৰ অভিযোগ উত্থাপন হৈছে।

নিলম্বনৰ পিছত তেওঁৰ কৰ্মস্থলী ঘোচৰাৰী খণ্ড শিক্ষা বিষয়াৰ কাৰ্যালয়লৈ স্থানান্তৰ কৰা হৈছে। উপস্থিতিৰ প্ৰমাণিত প্ৰতিবেদনৰ ভিত্তিতহে তেওঁক জীৱননিৰ্বাহ ভাট্টা প্ৰদানৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছে। তেওঁৰ বিৰুদ্ধে বিভাগীয় অভিযোগনামা প্ৰস্তুত কৰাৰ লগতে তদন্তও চলি আছে।

ভাগলপুৰঃ অস্তিত্বহীন শিক্ষকৰ নামত লাখ লাখ টকা আদায়

ভাগলপুৰ জিলাতো এইচআৰএমএছ পৰ্টেলৰ জৰিয়তে ভুৱা শিক্ষকৰ নামত চৰকাৰী ধন আদায় দিয়াৰ দুটা পৃথক ঘটনা পোহৰলৈ আহিছে।

২০২৬ চনৰ ২১ অক্টোবৰৰ শিক্ষা বিভাগৰ এক নিৰ্দেশ অনুসৰি, ভুৱা শিক্ষকৰ নামত পৰ্টেলৰ জৰিয়তে অননুমোদিত ধন আদায় দিয়াৰ অভিযোগত জিলা কাৰ্যসূচী বিষয়া শশী চন্দন চৌধুৰীৰ বিৰুদ্ধে ৮ অক্টোবৰত যোগছাৰ আৰক্ষী থানাত গোচৰ ৰুজু কৰা হৈছিল। পিছদিনাই তেওঁক গ্ৰেপ্তাৰ কৰা হয়। অৱশ্যে এই ঘটনাত কিমান পৰিমাণৰ ধন উলিয়াই নিয়া হৈছিল, সেয়া বিভাগীয় নিৰ্দেশত উল্লেখ কৰা হোৱা নাই।

আন এটা ঘটনাত ভাগলপুৰৰ জিলা শিক্ষা বিষয়াক নিলম্বন কৰা হৈছে। তনুশ্ৰী নামৰ এগৰাকী কাল্পনিক শিক্ষয়িত্ৰীৰ নামত কেইবামাহো ধৰি ৯৮,১২,৭৭৩ টকা অননুমোদিতভাৱে আদায় দিয়াৰ অভিযোগ উত্থাপন হৈছে। এই সন্দৰ্ভতো ২০২৬ চনৰ ৮ অক্টোবৰত যোগছাৰ আৰক্ষী থানাত গোচৰ ৰুজু কৰা হৈছিল।

৩৮খন জিলাতে নিৰীক্ষণ, পৰ্টেলৰ নিৰাপত্তা বৃদ্ধিৰ পদক্ষেপ

তিনিখন জিলাত পোহৰলৈ অহা এই ঘটনাই বিহাৰৰ শিক্ষা বিভাগৰ অনলাইন দৰমহা প্ৰদান ব্যৱস্থাৰ নিৰাপত্তা, বিত্তীয় নিয়ন্ত্ৰণ আৰু কৰ্মচাৰীৰ তথ্য পৰীক্ষাৰ ব্যৱস্থাক লৈ গুৰুতৰ প্ৰশ্নৰ সৃষ্টি কৰিছে।

ৰাজ্য চৰকাৰে এতিয়া আটাইকেইখন ৩৮খন জিলাতে এইচআৰএমএছ পৰ্টেলৰ কাম-কাজ পৰীক্ষা কৰাৰ সিদ্ধান্ত লৈছে। পৰ্টেলৰ গোপন প্ৰৱেশ সংকেতৰ অপব্যৱহাৰ আৰু দৰমহাৰ তথ্যত অননুমোদিত পৰিৱৰ্তন ৰোধ কৰিবলৈ কাৰিকৰী বিশেষজ্ঞৰ সহায় লোৱা হৈছে। বিশেষকৈ শিক্ষকৰ নিযুক্তি আৰু কৰ্মৰত অৱস্থাৰ তথ্যৰ সত্যতা পৰীক্ষা, মেকাৰ আৰু চেকাৰৰ লগ-ইনৰ ওপৰত কঠোৰ নজৰদাৰী আৰু দৰমহাৰ বিভিন্ন শিতানত অনুমোদনবিহীন পৰিৱৰ্তন ৰোধৰ বাবে অধিক শক্তিশালী ব্যৱস্থা গঢ়ি তোলাৰ প্ৰয়োজনীয়তা এই নিৰীক্ষণত স্পষ্ট হৈ পৰিছে।

বিভাগটোৰে ইংগিত দিছে যে বিস্তৃত নিৰীক্ষণ প্ৰক্ৰিয়া অব্যাহত থকাৰ সময়তে বিত্তীয় অনিয়মত জড়িত বুলি প্ৰমাণিত হোৱা শিক্ষক আৰু বিষয়াসকলৰ বিৰুদ্ধে কঠোৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা হব।

GAURANSHI
INDUSTRIES

Gunika™

Purity in Every Drop, Nature in Every Product.

100% NATURAL



NO ADDITIVES
BOOSTS IMMUNITY
RICH IN ANTIOXIDANTS
ECO FRIENDLY

TEA

NAME	MAKHANA (FOX NUT SUPERFOOD)	ASSAM CTC TEA	ASSAM CTC TEA
SIZE	200gm	250gm	100gm

HONEY



NAME	MORINGA HONEY	TULSI HONEY
SIZE	200gm	200gm



NAME	MUSTARD HONEY	LITCHI HONEY	WILD FOREST HONEY
SIZE	200gm	200gm	200gm

RAW & UNPROCESSED | PURE & NATURAL | DIRECTLY FROM OUR FARMS | TRUSTED BY THOUSANDS

3rd Floor, IIT Road,
Jayguru, Amingaon,
Kamrup, Assam - 781031, India

Contact :
+91-88224 20619

E-Mail :
gauranshiind@gmail.com
www.gauranshiindustries.com

VOICE OF ALL, FOR ALL
WEEKLY
JAN JAN VICHAR
Guwahati, Friday, 06 November 2026





ASSAM SEEKS CBI PROBE INTO FLOOD DISASTER



Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

Nearly four months after devastating floods ravaged Upper Assam, the state government has decided to seek a Central Bureau of Investigation (CBI) inquiry into the disaster, bringing the questions of flood management, administrative preparedness and public accountability back into focus.

The Assam Cabinet, chaired by Chief Minister Himanta Biswa Sarma, on November 3 approved a proposal to request a CBI investigation into the unprecedented flooding that struck Sivasagar and Charaideo districts in July 2026. The decision is significant as it signals the government's willingness to seek an independent investigation into the circumstances behind a disaster that caused widespread destruction across parts of eastern Assam.

Announcing the decision after the Cabinet meeting at Lok Sewa Bhawan in Dispur, the Chief Minister said the state government would send a formal request to the Centre within the next 10 days. However, he clarified that the final decision on accepting the request and conducting the investigation would rest with the Centre and the CBI.

The stated objective of the proposed investigation is to establish the exact causes of the floods. But for thousands of affected residents, the larger question remains: could the scale of the devastation have been reduced through better planning, stronger infrastructure and timely administrative intervention?

A disaster that exposed the vulnerability of Upper Assam

The July floods were among the most devastating episodes experienced by Upper Assam in recent years. Sivasagar, Charaideo and neighbouring Jorhat district witnessed extensive inundation as rivers and their tributaries overflowed following exceptionally heavy rainfall in the region. According to reports, at least 66 people had died and nearly seven lakh people had been affected across Assam during the intense phase of flooding. The situation was particularly severe in Upper Assam, where several areas remained inaccessible even after floodwaters began to recede.

Who is accountable for the July floods? Sivasagar and Charaideo await answers.

The Dikhow, Disang and Dhansiri rivers rose above their danger levels, inundating residential areas, agricultural fields and essential infrastructure. The impact was particularly severe in parts of Sivasagar and Charaideo, where residents faced displacement, damage to homes, loss of crops and disruption of normal life.

The state government had initially pointed to exceptionally heavy rainfall in neighbouring Nagaland as a major factor behind the sudden rise in water levels. However, weather experts also raised questions about the role of changing rainfall patterns, land-use changes, excavation and deforestation in aggravating flood conditions. The exact contribution of these factors remains to be established.

What should the CBI investigation examine?

The proposed inquiry is expected to focus on identifying the circumstances and causes behind the flooding. However, its public significance will depend on how comprehensively it examines the issues surrounding flood management.

Several questions deserve attention:

1. Embankment safety and maintenance: Were existing embankments, drainage channels and flood-control structures adequately maintained? Were there any structural weaknesses, breaches or delays in repair work that contributed to the damage?

2. Administrative preparedness: Were warnings about heavy rainfall and rising river levels communicated in time? Were district authorities adequately prepared to evacuate vulnerable communities and organise emergency relief?

3. River management and environmental changes: Did deforestation, hill cutting, excavation or other human activities aggravate the flow of floodwater? Was there adequate coordination between Assam and neighbouring Nagaland in monitoring rainfall and river conditions?

4. Use of public funds: Were funds allocated for flood protection, embankment repairs and drainage improvement utilised effectively? If shortcomings are established, who should be held accountable?

These are questions requiring evidence-based investigation rather than assumptions. The CBI inquiry, if accepted, could provide an opportunity to examine them systematically.

Relief announced, but rehabilitation remains crucial

The government announced several relief and rehabilitation measures following the disaster, including financial assistance for affected families, compensation for damaged houses and agricultural losses, and concessions on land revenue and electricity bills in Sivasagar and Charaideo.

The Chief Minister also announced interim assistance of Rs

Continued on page 19

6,000 BIGHA DEFENCE PARK

A New Industrial Future For Assam Or Another Big Promise?

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

Assam has taken another significant step towards expanding its industrial and infrastructure ambitions, with the state Cabinet approving 6,000 bighas of land near Nellie in Morigaon district for a proposed Defence Park aimed at attracting defence equipment manufacturers and building a new industrial base in the state.

The decision, taken at a Cabinet meeting chaired by Chief Minister Himanta Biswa Sarma at Lok Sewa Bhawan in Dispur on November 3, is being projected as an important opportunity for Assam to enter India's expanding defence manufacturing sector. Alongside the proposed industrial hub, the Cabinet also approved five ropeway projects across the state and additional financial support for paddy farmers, raising the procurement price to Rs 2,640 per quintal. Together, these decisions indicate the government's intention to push industrial development, tourism infrastructure and agricultural welfare. However, the real test will lie not in the scale of the announcements but in their implementation, the investments they attract and the benefits they deliver to ordinary people.

Defence Park: 6,000 bighas, but where are the industries?

The proposed Defence Park near Nellie is arguably the most ambitious of the Cabinet's latest decisions. Spread across approximately 6,000 bighas, the project is intended to create a dedicated manufacturing ecosystem for defence equipment and related industries. The government believes that Assam has the potential to attract investors in a sector that has traditionally remained concentrated in a few industrial regions of the country. The proposed park is expected to provide industrial land and infrastructure to companies interested in manufacturing defence-related products. The Chief Minister has indicated that the government will approach potential investors through roadshows and investment promotion activities.

The project is also being positioned within the broader national objective of strengthening domestic defence production and reducing dependence on imported military equipment. However, a major industrial park cannot be built on land allocation alone. It requires committed investors, reliable electricity, road and rail connectivity, water supply, skilled manpower, specialised infrastructure and a predictable industrial policy.

The Cabinet has approved the land allocation, but specific anchor investors, manufacturing agreements, confirmed investment commitments and a production commencement schedule have not yet been publicly established. This raises an important question: how soon will the proposed Defence Park move from the planning stage to actual industrial production?

Land acquisition and local interests cannot be ignored

The proposed project also brings land-related concerns into focus. Reports indicate that the identified land includes government-owned land as well as plots that may need to be acquired from local residents. The government must ensure that the process is transparent and that the interests of affected landowners and neighbouring communities are protected. Fair compensation, proper consultation, rehabilitation wherever required and clarity over land ownership will be essential to maintaining public confidence. The success of the Defence Park should not be measured merely by the amount of land brought under industrial use. It must also be judged by how much economic opportunity it creates for the people living in and around Nellie.

Local youth should receive priority in skill-development programmes and employment opportunities wherever their qualifications match industrial requirements. Technical training institutions and local educational establishments should also be linked with the proposed manufacturing ecosystem. Otherwise, there is a risk that a large industrial project could come up on local land while the most significant employment and business benefits go to people from outside the region.

Five ropeways: Tourism boost or a new transport reality?



In another major decision, the Cabinet approved a Ropeway Development Agreement between the Assam government and the National Highways Logistics Management Limited (NHLML), a company under the National Highways Authority of India. Five ropeway corridors have been identified under the proposed programme:

Kamakhya Railway Station–Kamakhya Temple: *1.43 km, Guwahati.*

Khanapara–Guwahati Railway Station: *11 km, Guwahati.*

Ganganagar Part-VII–Bhuban Pahar Mahadev Temple: *2.80 km, Cachar*

Jatinga Bird Watching Tower–Hempeupet Peak: *3.50 km, Dima Hasao district.*

Agnigarh–Bhairabi Mandir: *1.80 km, Sonitpur district.*

These projects are expected to improve connectivity to important religious and tourist destinations, reduce road congestion and encourage tourism in different parts of Assam.

The proposed Khanapara–Guwahati Railway Station ropeway could offer an alternative transport corridor in a city where traffic congestion has become a persistent concern. Similarly, the Kamakhya ropeway could improve access to one of the country's most important pilgrimage destinations.

For the hill districts, the projects could provide better access to tourism locations and create opportunities for local businesses, transport operators, guides and hospitality services. However, the government must clarify project costs, construction schedules, environmental clearances, safety standards and passenger fares. Without affordable fares and proper integration with existing public transport, the benefits of these projects could remain limited.

Paddy procurement price raised to Rs 2,640 per quintal

While the Defence Park represents the government's industrial ambitions, the increase in paddy procurement support directly concerns Assam's agricultural population. The Cabinet approved an additional Rs 200 per quintal for paddy procurement during the ongoing Kharif Marketing Season. With this additional support, the announced procurement price will rise to Rs 2,640 per quintal. The decision is expected to provide additional financial relief to farmers and improve returns from paddy cultivation. For Assam's farming community, however, the announced price is only one part of the larger agricultural challenge. Farmers also face rising cultivation costs, expensive fertilisers and agricultural inputs, labour shortages, uncertain weather conditions and difficulties in accessing organised procurement facilities. The government must ensure that farmers can actually sell their produce at the announced rate through functioning procurement centres. Timely payments, adequate procurement capacity and transparent purchasing procedures will be equally important. A higher announced price will have limited impact if small and marginal farmers are unable to access the procurement system.

The latest Cabinet decisions reflect an ambitious development agenda, ranging from defence manufacturing and tourism infrastructure to agricultural support and private investment.

A Blue Tsunami, A Red Crisis: Trump's GOP Faces a Battle for Survival

Jan Jan Vichar
...✍Washington



The Republican Party of US President Donald Trump is facing one of its biggest political setbacks following a sweeping Democratic victory in the midterm elections, triggering a fresh battle over the party's leadership and future direction. With Democrats taking control of both the House of Representatives and the Senate, the election has not only weakened Trump's political position but also exposed growing divisions within the Republican camp.

The defeat across traditionally Republican strongholds, including Texas, Kansas, South Carolina, Iowa, North Carolina and Ohio, has raised serious questions about the effectiveness of Trump's political strategy and the future of the Make America Great Again (MAGA) movement. For Republicans, the challenge is now twofold: confronting a Democratic-controlled Congress and deciding who will lead the party in the post-Trump era.

Blue Tsunami' Signals Voter Backlash

The scale of the Democratic victory has been described by Republican Senator Ted Cruz as a "Blue Tsunami" and a rejection comparable to the political fallout of Watergate. Cruz argued that the setback was not simply the result of Republican supporters staying away from polling stations, but reflected a shift among voters who had previously backed the GOP.

He identified inflation, corruption allegations, the Iran war and Trump's tariff policies as major factors behind voter dissatisfaction. His remarks have intensified the debate within Republican ranks over whether the party needs to reconsider its political messaging and policy priorities. The results suggest that economic concerns and dissatisfaction with the administration's policies have become significant electoral challenges for Trump and his party.

Succession Battle Begins Within Republican Ranks

Even as Trump remains in the White House, the question of who will inherit his political legacy is increasingly dominating Republican discussions. Vice-President JD Vance, once widely viewed as the frontrunner for the post-Trump leadership, now faces the challenge of defending his political standing after actively campaigning for Republican candidates and playing a key role in fundraising efforts for the Republican National Committee.

The party's electoral setback could complicate Vance's presidential ambitions, particularly because of his close association with the Trump administration. Senator Ted Cruz, meanwhile, has emerged as a vocal critic of the party's electoral performance. His blunt assessment of the defeat has strengthened speculation that he may seek a more prominent role in shaping the GOP's future.

Secretary of State Marco Rubio and Florida Governor Ron DeSantis are also being discussed as potential contenders for the party's leadership. Their political positions and ability to appeal beyond Trump's core support base could become important factors in the emerging succession contest.

Can MAGA Survive Without Trump?

The biggest question facing Republicans is whether the MAGA movement can remain politically influential without Trump at its centre. Some conservative strategists believe the party must gradually move away from Trump's confrontational political style and return to a more traditional form of conservatism. Others argue that MAGA has become a powerful political identity that cannot easily be separated from the Republican Party. The Rockbridge Network, established by conservative strategist Chris Buskirk, is reportedly working to connect wealthy donors and political activists in an effort to sustain the MAGA movement beyond Trump's presidency.

A Difficult Road Ahead for Trump

Trump is constitutionally scheduled to complete his presidential term in January 2029, but the Democratic takeover of Congress could significantly restrict his administration's legislative agenda. Congressional investigations, budgetary confrontations and disagreements over domestic and foreign policy could further intensify political tensions in Washington.

The midterm verdict, therefore, represents more than an electoral setback. It could mark the beginning of a defining struggle over the Republican Party's identity, leadership and political direction. For Trump, the immediate challenge will be to retain control over a party facing growing internal dissent. For Vance, Cruz, Rubio and DeSantis, the coming political battle could determine who emerges as the leading face of the Republican Party after Trump. The real test for the GOP is no longer just how to recover from the Blue Tsunami, but whether it can imagine a political future beyond Donald Trump.

Abdul's US Senate Victory Celebrated in Karnataka's Bhatkal

Jan Jan Vichar
...✍Bhatkal

The election of Abdul El-Sayed as the first Muslim senator in the United States has sparked celebrations far beyond American shores, reaching Bhatkal town in Karnataka, where his wife Sarah's relatives have welcomed the victory with immense pride and happiness. For Sarah's family members in Bhatkal, the electoral success is not just a political milestone but also a deeply personal moment. Her cousins, Jukaku Shamsuddin Zia and Bibi Husna, expressed happiness over El-Sayed's achievement and described him as a humble, approachable and gentle person. Although El-Sayed is a prominent political figure in the United States, his relatives in Bhatkal remember him for his simplicity and courteous nature. His victory has added a special sense of celebration among the family, turning an American electoral milestone into a moment of joy for relatives in Karnataka.



EDITORIAL

Cyber Warfare

The reported cyberattack on France's public blood service exposes a disturbing new dimension of digital warfare. Hackers allegedly attempted to manipulate the temperature of blood-storage freezers, threatening supplies meant for thousands of hospitals. Although alarm systems detected the intrusion in time and the stored blood products were reportedly secured, the incident raises questions that governments can no longer afford to ignore.

The danger goes far beyond France. The country's blood service supports more than 1,900 hospitals and provides essential assistance to over a million patients annually. An attack on such infrastructure is not merely a breach of computer security; it is a potential threat to human lives. Equally alarming is the apparent exploitation of default passwords and internet-connected refrigeration controls. The same vulnerabilities have reportedly been used in attacks targeting hundreds of European supermarkets, resulting in food losses and disruption of essential services.

The suspected involvement of Russia-linked hacking groups adds a geopolitical dimension, although responsibility for these incidents remains unconfirmed. What is increasingly evident is that critical infrastructure has become an attractive target in the emerging landscape of cyber conflict. Governments have invested heavily in physical security, but digital vulnerabilities often remain neglected. Hospitals, blood banks, food supply chains, power networks and water systems cannot be protected by outdated passwords and inadequate monitoring.

Cybersecurity must now be treated as a national security priority rather than merely an IT concern. Mandatory security audits, stronger authentication, isolated control networks and emergency response systems are essential.

Is UP Becoming Ulta Pradesh for the BJP

Jan Jan Vichar
...✍Sunil Gatade

Chief minister Yogi Adityanath is burning the midnight oil, stirring through the politically key state to secure power for a third term in the polls just four months away. The election scheduled in early 2027 is taking place for the first time after the massive donation theft scandal at Ayodhya came to the fore. The faithful have been hurt, and no one knows how deep the wound is. The Opposition is out to exploit it to the fullest, to hit where it hurts most.

Coupled with this, the issues of price rise and unemployment, as well as student unrest; have become a cause for concern. In the last Lok Sabha polls, the BJP had got a shock of its life with its tally sharply plunging from 62 to 33 in the state's 80 seats. The election had witnessed the Akhilesh Yadav Samajwadi Party coming out with its best-ever performance of 37 seats. Whatever the reasons, the word is out that the state BJP is not fully behind him and that the chief minister is facing backlash for promoting 'thakurvad'. State BJP chief Pankaj Chaudhary is not known to be a Yogi fan.

This does not mean the end of the road for the Yogi, who looks unfazed and could come up the winner by doing what he knows best – the communal polarisation card, the vicious 80-20 game that has seen him come on the top. Anything can happen by the time of the elections is what is being said ominously. This means there could be a slip between the cup and the lip for rival sides given the BJP's propensity to play the communal card to a devastating effect.

Uttar Pradesh is the jewel of BJP's Hindutva politics, and it is not for nothing that the former Gujarat CM had turned it into his karmabhumi. There are many ifs and buts if the BJP is to repeat its dismal performance in the Lok Sabha polls, which had resulted in Narendra Modi failing to get an absolute majority for the third term. It should not be forgotten that the BJP had lost Ayodhya in the polls, much to the shock of the world's largest party.

The Yogi is posing to be deferential to Mr Modi, knowing fully well that the PM might be facing a crisis at the national level but still has the wherewithal to turn things topsy-turvy for him. All is not well in the organisation, as is clear from the fact that party chief Nitin Nabin, as well as some central office bearers and RSS leaders, recently held feedback sessions with regional leaders, which saw issues of 'neglect' by a section of leadership coming to the fore. Reports of Amit Shah coming to Uttar Pradesh soon for tightening the nuts and bolts have also appeared. But the thing is that the scenario in the state ahead of the 2027 polls is not the one that was in 2022 or 2017. The Brahmins, who have a traditional rivalry with the Thakurs, are not happy with Yogi, who has used his power to spread the influence of his community far and wide. The problem for the Brahmins is that since they have aligned with the BJP for long, they have become alien to other parties. The community shifted from the Congress lock, stock and barrel after the beginning of the Ram Janmabhoomi movement in the late 80s, making the grand old party a cripple in the most crucial state. Will the TINA (There Is No Alternative) factor help the BJP to keep a majority of Brahmins with it? The answer could be in the affirmative at the present. The dominance of Thakurs at the police station level too has affected other communities.



Akhilesh Yadav had lost power after people were fed up with the Yadav control of police stations that, according to their perception, had helped the Yadavs and the Muslims alone. However, Yogi's take on his governance is different: 'We have razed mafia to dust.' He insists that his government's zero-tolerance policy towards crime has resulted in better facilities, economic growth, and investment in the state. While the BJP is making every effort to come up as the winner in UP, it is not unduly worried as to whatever the outcome.

A section in the BJP believes that whatever happens in Uttar Pradesh, it is unlikely to affect the party at the national level or the Modi dispensation. This meant that an upset for Yogi is not necessarily an upset for the PM. The BJP, especially Modi, has honed the art of managing the states to his will from the Centre; whatever the dispensation there, goes the refrain. It was the Modi brand of 'cooperative federalism' or whatever the detractors say. Besides, an Opposition-ruled state helps the BJP grow there in the Lok Sabha polls, is the reasoning. Heads, I win; tails, I win. In the last Assembly polls, there were a number of seats won by the BJP by a very lesser margin. Yogi had pygmed all other leaders, be they Deputy CMs or ministers, to such an extent that the impression for the past decade is that Yogi alone rules. This was bound to have its fallout at a time when the Samajwadi Party is looking a serious contender for power. In the just concluded UP Legislative Council (MLC) elections, the BJP lost the Varanasi Teachers' constituency, a politically significant seat because Varanasi is the PM's Lok Sabha constituency. The outcome of the Assembly polls also depended upon the index of Opposition unity in the state. If the much-talked-about Samajwadi Party-Congress alliance takes place without much friction, the BJP will get a run for its money, as the Opposition would be raring to cause an upset. But if the Opposition's alliance-making falters, it could lead to an advantageous situation for the BJP, which had won a number of seats last time by a slender margin.

BSP supremo Mayawati is becoming a spent force day by day as she has become inactive to the core. In recent elections, she has played a role that supports the BJP by her inaction and helping to split the opposition vote. With the UP polls on the cards, 2027 is going to be politically significant for the BJP.

No Apraadh in Bihar, Only Crimes

CM Samrat Choudhary's Remark Triggers Political Row

Jan Jan Vichar
...✍Varun Kumar, Patna

Bihar Chief Minister Samrat Choudhary's remark that there is no 'apraadh' in the state, although crimes may occur, has triggered a political controversy, with the Opposition questioning the government's claims on law and order.

Speaking at an event organised by the National Highways Authority of India (NHAI) in Delhi on Tuesday, Choudhary said, "Hamare yahan koi apraadh nahi hai. Apraadh ka concept hi khatam ho chuka hai. Crime ho sakte hain, lekin apraadh nahi, koi apraadhi nahi hai."

The statement drew a sharp response from Rashtriya Janata Dal (RJD) working president and Leader of Opposition in the Bihar Assembly, Tejashwi Yadav, who shared a video of the Chief Minister's remarks on social media platform X.

Questioning Prime Minister Narendra Modi's leadership, Yadav asked whether he wanted to see Bihar ruined under Choudhary's leadership.



Taking a further swipe at the Chief Minister, the RJD leader questioned whether the bureaucrats present on the stage felt honoured or humiliated while working with someone who, according to him, had once been named in a case related to the murder of seven people.

Choudhary, who began his political career with the RJD, has consistently maintained that he was falsely implicated in a case registered in the 1990s in his home district of Munger.

First BJP Chief Minister After Nitish Kumar's Exit

Choudhary took over as Bihar's Chief Minister in April 2026, becoming the first BJP leader to hold the post in the state. His elevation followed the departure of Nitish Kumar, Bihar's longest-serving Chief Minister, from the office. Nitish Kumar is now a Rajya Sabha MP, while his son Nishant Kumar has joined the Bihar Cabinet as Health Minister.

Chirag Praises Choudhary's Crime-Control Vision

Union Minister Chirag Paswan, whose Lok Janshakti Party (Ram Vilas) is part of the NDA alliance, declined to comment directly on the Chief Minister's controversial remarks but praised his approach to crime control. Paswan said that Choudhary, being both the Chief Minister and Home Minister, must have facts and figures to support his statement. As a Bihari, I would like to see the state become crime-free and emerge as a fertile destination for investors," Paswan said.

The contrasting reactions from the Opposition and NDA allies have brought the issue of law and order in Bihar back into the political spotlight, with the Chief Minister's remarks becoming the centre of a fresh political debate.

Continued from page 15

ASSAM SEEKS CBI PROBE INTO FLOOD DISASTER

15,000 per severely affected family. In September, the government reported transferring Rs 25.12 crore to 16,746 flood-affected families in Sivasagar, Charaideo and Jorhat. However, immediate financial assistance cannot by itself address the long-term consequences of a major flood disaster. Damaged agricultural land, lost livelihoods, destroyed houses and disrupted local economic activities require sustained rehabilitation.

For farming families, the loss of an entire agricultural season can have consequences extending well beyond the period of inundation. Small traders, daily wage earners and rural households also need support to restore their sources of income.

A transparent assessment of losses and timely delivery of eligible compensation will therefore remain essential.

Beyond investigation: Can Assam build a stronger flood-management system?

The Cabinet's decision to seek a CBI inquiry is an important administrative development, but an investigation alone cannot prevent another disaster. Assam remains highly vulnerable to floods because of its river systems, intense monsoon rainfall and geographical conditions. The experience of July 2026 underlines the need for a comprehensive approach involving scientific flood forecasting, regular inspection of embankments, improved drainage, river-basin management and coordination with neighbouring states.

Climate change is also increasing concerns over extreme rainfall events, making traditional flood-management practices increasingly inadequate in certain vulnerable areas. The state needs to move beyond emergency relief and adopt a long-term strategy that combines infrastructure improvement, environmental protection and community-level disaster preparedness.

Accountability must go beyond a Cabinet announcement

The proposed CBI inquiry has raised expectations among flood-affected residents that the circumstances behind the disaster will finally receive a thorough examination. But the announcement is only the first step. The state government must formally submit its request, the competent authorities must decide on the investigation, and any inquiry undertaken must be allowed to proceed independently.

The people of Sivasagar and Charaideo deserve clear answers about what happened, why the devastation was so extensive and whether preventable administrative or infrastructural failures contributed to the disaster. For the flood-hit population, the real test will not be the announcement of an investigation, but whether it produces accountability, meaningful rehabilitation and concrete measures to prevent a recurrence.

Dilwali Diwali

A Heartwarming Reminder That Home Is Where the Heart Belongs



Not every dream of a better life requires a bigger house or a more luxurious address. Sometimes, happiness lies in the familiar surroundings, old friendships and memories that turn a house into a home. Dilwali Diwali explores this simple but meaningful idea through the story of a Punjabi family caught between modern aspirations and emotional attachment to its roots.

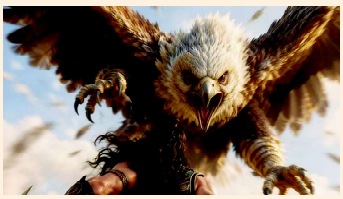
The film centres on the Sikka family. Goggi (Manoj Pahwa), his wife Sukhi (Neelu Koli) and their daughter Mahi (Aurra Bhatnagar Badoni) live in an old house surrounded by memories and a close-knit neighbourhood. Their son Ansh (Mihir Ahuja), who has been living in Norway for years, wants to improve his parents' lifestyle. With that intention, he buys them a luxurious apartment in a high-rise building.

But the parents are unwilling to abandon the home and neighbourhood where they have spent much of their lives. Rather than disappoint their son, they pretend to have shifted to the new apartment while continuing to live in their old house. The situation takes an emotional turn when Ansh returns home for Diwali and discovers the truth.

Written by Ritu Mago and directed by Ritesh Menon, the film addresses a familiar conflict between generations. For many young people, progress means better facilities, modern homes and a more comfortable lifestyle. For their parents, however, happiness is often rooted in relationships, familiar faces and the emotional security of a neighbourhood. The film's Punjabi setting, everyday humour and opening scenes featuring Goggi's morning conversations with friends over chole bhature lend the story an appealing cultural warmth. However, the film's promising subject is not explored with sufficient depth. The screenplay remains predictable, and several emotional situations feel hurried. Sukhi's character briefly raises an interesting question about women who spend their lives prioritising family responsibilities while setting aside their own aspirations. Unfortunately, the film does not develop this aspect meaningfully. The conflict between Ansh's intentions and his parents' emotional attachment to their old home also deserved a more nuanced treatment.

The performances are among the film's strongest points. Manoj Pahwa is particularly impressive as Goggi, balancing humour, warmth and vulnerability with ease. Neelu Koli brings sincerity to Sukhi, while Mihir Ahuja convincingly portrays a son whose desire to provide comfort gradually turns into an emotional realisation. Aurra Bhatnagar Badoni offers dependable support. At just 61 minutes, Dilwali Diwali is a short and accessible family entertainer. Its limited runtime, however, becomes a weakness as the story moves too quickly to allow its characters and emotional conflicts to develop fully.

Anupam Kher Appeals to Audiences as 'Ramayanam' Hits Theatres



Actor Anupam Kher, who lends his voice to Jatayu and serves as the narrator in the mythological film Ramayanam, has shared a special message on the film's worldwide release on November 5. Congratulating the cast, producers, technicians and entire team, Kher expressed hope that audiences across the world would shower the film with love and blessings. He concluded his message with "Jai Shri Ram". The veteran actor also revealed that he has been receiving congratulatory messages and calls for his performance. A dramatic face-off between Jatayu and Ravana, played by Yash, is among the film's major highlights.



Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com,Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary